सत्यमेव जयते

संगम

राजभाषा
हमारी पहचान
हमारा अभियान

हिंदी से जुड़ें, देश से जुड़ें

अंक - 1
वर्ष - 2026

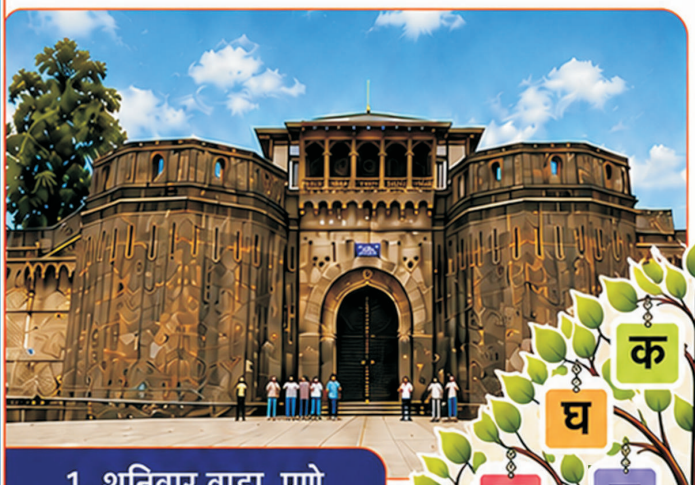

1. शनिवार वाडा, पुणे

2. सिंहगढ़ किला, पुणे

3. सावित्रीबाई फुले
पुणे विश्वविद्यालय

4. खडकवासला बाँध, पुणे

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-2), पुणे

संयोजक कार्यालय :
सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे - 411008

सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India

NCL

नराकास (का.-2), पुणे के सदस्य कार्यालय

सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे द्वारा संचालित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास–2, पुणे) को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी दिवस–2025 एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में प्रशंसनीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार नराकास सचिव डॉ. (श्रीमती) स्वाति चड्ढा ने ग्रहण किया ।

अंक: 1

वर्ष : 2026

संरक्षक

डॉ. आशीष लेले

निदेशक, सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.–2), पुणे

प्रधान संपादक

डॉ. (श्रीमती) स्वाति चड्ढा

वरिष्ठ हिंदी अधिकारी एवं सदस्य–सचिव
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.–2), पुणे

संपादक मंडल

डॉ. संजय सिंह

वैज्ञानिक 'एफ', आघारकर अनुसंधान संस्थान,
पुणे

डॉ. अपर्णा एस. कलावटे,

वैज्ञानिक–'ई', भारतीय प्राणी सर्वेक्षण,
पुणे

श्री संदीप वाघमारे

वैज्ञानिक–'ग', केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, राज्य
इकाई, पुणे

श्री हंस प्रताप सिंह,

हिन्दी अधिकारी
भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान, पुणे

सहयोग

गोला बारूद निर्माणी, खड़की, पुणे

नोट– पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकार के व्यक्तिगत विचार हैं। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.–2), पुणे अथवा संपादक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही वे इसके लिए उत्तरदायी हैं।

संयोजक संपर्क सूत्र : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.–2), पुणे
सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला
डॉ. होमी भाभा मार्ग, पाषाण, पुणे – 411008 (भारत)
दूरभाष: 020-25902130 फैक्स: 020-25902660
Website: www.ncl-india.org/Tolic/Index **E-mail:** s.chadha@csir.res.in / tolic2pune@gmail.com

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

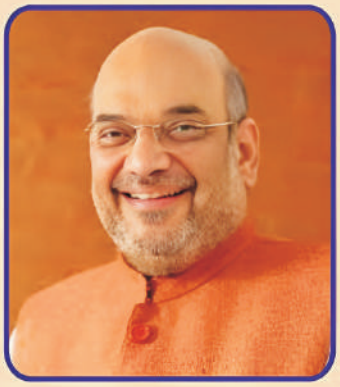

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-2), पुणे, महाराष्ट्र

डॉ. आशीष लेले, अध्यक्ष
सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला
डॉ. होमी भाभा मार्ग, पाषाण, पुणे - 411008
दूरभाष : (020) 2590 2600
फैक्स : (०२०) २५९० २६०१
ई-मेल : director@ncl.res.in

डॉ. (श्रीमती) स्वाति चड्ढा, सदस्य-सचिव
सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला
डॉ. होमी भाभा मार्ग, पाषाण, पुणे - 411008
दूरभाष : (020) 2590 2130
फैक्स : (020) 2590 2660
ई-मेल : s.chadha@ncl.res.in
tolic2pune@gmail.com

अध्यक्ष की कलम से .....

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-2), पुणे राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी दिशानिर्देशों के अंतर्गत राजभाषा गतिविधियों का आयोजन सफलतापूर्वक कर रही है एवं सदस्य कार्यालयों के सक्रिय सहयोग से हमारी इस समिति द्वारा कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

मैं नराकास (का.-2), पुणे के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं देते हुए गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं कि हमारी इस समिति द्वारा '**संगम**' पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित किया जा रहा है। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं बल्कि हमारी भाषा, संस्कृति और साहित्य के प्रति हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता का जीता-जागता प्रमाण है। यह पत्रिका हमारे सभी सदस्य कार्यालयों को एक सामूहिक मंच भी प्रदान करती है।

मैं इस गौरवमयी अवसर पर सभी लेखकों, रचनाकारों और संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। आपकी लेखनी ने न केवल हिन्दी का वैभव बढ़ाया है बल्कि विचारों, विविध संस्कृतियों और सामूहिक ज्ञान के प्रसार में भी योगदान दिया है। यह पत्रिका एक ऐसी प्रेरणा है, जो पाठकों को निश्चय ही हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम और समर्पण की भावना प्रदान करेगी।

पत्रिका के सफल संपादन एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मेरी शुभकामनाएं।

आशीष लेले

(डॉ. आशीष लेले)

डॉ. आशीष लेले, अध्यक्ष
सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला
डॉ. होमी भाभा मार्ग, पाषाण, पुणे - 411008
दूरभाष : (020) 2590 2600
फैक्स : **(020) 2590 2601**
ई-मेल : director@ncl.res.in

डॉ. (श्रीमती) स्वाति चड्ढा, सदस्य-सचिव
सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला
डॉ. होमी भाभा मार्ग, पाषाण, पुणे - 411008
दूरभाष : (020) 2590 2130
फैक्स : (020) 2590 2660
ई-मेल : s.chadha@ncl.res.in
tolic2pune@gmail.com

संपादकीय .....

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-2), पुणे की सदस्य सचिव के रूप में इस समिति की वार्षिक पत्रिका '**संगम**' के प्रथम अंक को आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष और गौरव की अनुभूति हो रही है। हमारी समिति की यह पत्रिका नराकास(का.-2), पुणे के समस्त सदस्य कार्यालयों का सामूहिक प्रयास है, हमारी अभिव्यक्तियों का एक संगम है, यही कारण है कि इस का नाम सभी सदस्य कार्यालयों ने वोटिंग करके '**संगम**' चुना है।

यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के उत्थान, सम्मान और समर्पण की ऐसी ज्योति है, जो न केवल हमारी भावनाओं को प्रकट करती है, बल्कि राष्ट्रभक्ति और भाषा प्रेम की भावना को भी नई ऊँचाइयों तक ले जाती है। सभी सदस्य कार्यालयों के कर्मठ कर्मियों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं, वैचारिक लेखों, कविताओं, तकनीकी लेखों और शोधपत्रों के माध्यम से पत्रिका के इस अंक को अभूतपूर्व बनाया है। यह सभी रचनाएं न केवल हिन्दी के प्रति उनके लगाव और सम्मान को व्यक्त करती है अपितु भाषा को जीवित रखने और उसे वैश्विक मंच तक पहुंचाने के उनके प्रयासों का प्रतीक भी है।

आइए, हम सब मिलकर '**संगम**' के इस अंक को हिन्दी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक बनाएं। आपके अथक परिश्रम, समर्पण और अटूट उत्साह ने इस पत्रिका को सफलता के एक नए पटल पर स्थापित किया है, जिसके लिए मैं आप सभी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूं।

आप सब के सहयोग और समर्थन सहित राजभाषा हिन्दी एवं हमारी इस समिति को नई ऊँचाइयों पर ले जाने व अधिक सशक्त करने हेतु संकल्पबद्ध।

शुभकामनाओं सहित,

डॉ. (श्रीमती) स्वाति चड्ढा

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्रमांक
1.	कीटों का महत्वः धरती के नन्हें पर्यावरण प्रहरी	डॉ. अपर्णा सुरेशचंद्र कलावटे	7
2.	पर्यावरण हमारी जीवन रेखा	गिरिजा प्रसाद जैना	9
3.	वो गर्मी की छुट्टियां अब फिर से क्यों नहीं आतीं?	ज्योति यादव	11
4.	"बिदाई"	डॉ. पल्लवी जमदग्नि	12
5.	स्वच्छता है हमारी पहली ज़िम्मेदारी, इसमें हो हम सबकी भागीदारी	श्रीमती श्रुति त्रिपाठी	12
6.	महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता और आर्थिक सहभागिता	गुमान सिंह मीना	13
7.	"पेड़ के नाम"	श्रीमती कुमुद ककोनिया	15
8.	देवनागरी लिपि-वैज्ञानिकता और मानकीकरण	श्रीमती अलका पांडेय	16
9.	संयुक्त परिवार-समय की माँग	राजकुमार शिवाजी पवार	19
10.	वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समाज	अंकित अग्रवाल	20
11.	बदलती जलवायु में स्वास्थ्य सुरक्षाः पूर्वानुमान से उपचार तक	डॉ. सत्यबान बिशोई रत्न	21
12.	कृतघ्नता	श्री उपेंद्र धोंडे	23
13.	दीवार के उस पार	श्री विकाश कुमार	24
14.	जीवनः एक पावन यात्रा	स्वाती पाखरे	25
15.	यह कैसा बदलाव है	श्रीमती कविता श्रीवास्तव	25
16.	विश्वास की कीमत	सलीम बदशाह जे. नगरकट्टी	26
17.	स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत के विकास में विज्ञान की अहम भूमिका	श्री दयाल राम सैनी	27
18.	संयोग से संगम	डॉ. स्मृति गुप्ता	28
19.	कुछ तो लोचा है – विज्ञान पर्यावरण और मानवता	डॉ. निशा भारती	29
20.	पापा के दिल से.....	श्री निशीथ द्विवेदी	30
21.	साँची	सुश्री श्रद्धा चौहान	30
22.	बचपन के दिन	श्रीमती अलका पांडेय	31
23.	शौर्य गाथा	संजय बबन बो-हाडे	32
24.	"एक लड़की की पीएचडी तक की जिद और जीत की प्रेरणादायक कहानी"	कुमारी दुर्गा	33
25.	1) बारिश की बूंदे 2) महात्मा	निशा सोनेकर	34
26.	बदलता मौसम	मयूर रामशंकर बानाईत	35
27.	मेरे मन का गुल्लक	अनुभा पुलवाले	35
28	रे साकी	नीरज सोनकर	36
29	मुक्ति या बंधन	फिरोज अहमद	36
30	सीएसआईआर-एनसीएल, पुणे में एक दिवसीय हिन्दी राजभाषा संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन		37
31.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का. 2), पुणे की छः माही बैठक की रिपोर्ट दिनांक 30 जून, 2025		38
32	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-2), पुणे की छः माही बैठक की रिपोर्ट दिनांक 27 नवंबर, 2025		41

कीटों का महत्व : धरती के नन्हें पर्यावरण प्रहरी

डॉ. अपर्णा सुरेशचंद्र कलावटे
वैज्ञानिक-'ई',भारतीय प्राणी सर्वेक्षण,
पश्चिमी प्रादेशिक केंद्र, पुणे

हमारे चारों ओर फैली प्रकृति में असंख्य जीव-जंतु निवास करते हैं। इनमें से कीट (Insects) सबसे अधिक संख्या में पाए जाते हैं। आज की वैज्ञानिक गणना बताती है कि पृथ्वी पर ज्ञात सभी जीवों की प्रजातियों का लगभग दो-तिहाई हिस्सा केवल कीटों का है। सामान्यतः हम कीटों को परेशान करने वाला, नुकसान पहुँचाने वाला या बीमारियाँ फैलाने वाला मान लेते हैं, परंतु सच्चाई यह है कि यदि कीट न हों तो पृथ्वी पर जीवन की निरंतरता असंभव हो जाए। **धरती पर जीवन का संतुलन कीटों के बिना अधूरा है।** कीट केवल संख्या में अधिक नहीं हैं, बल्कि प्रकृति के संतुलन और मानव जीवन के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। इन्हें यूं ही **प्रकृति के अदृश्य नायक** नहीं कहा जाता।

कृषि में कीटों की भूमिका

स्रोत: गूगल

परागणकर्ता: मधुमक्खी, तितली, भौंरा और अन्य अनेक कीट पौधों में परागण की प्रक्रिया को संपन्न करते हैं। विश्व की लगभग 75 प्रतिशत फसलें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परागण करने वाले कीटों पर निर्भर हैं। यदि ये कीट लुप्त हो जाएँ, तो खाद्य संकट गहराता जाएगा और मानव सभ्यता को अस्तित्व का संकट झेलना पड़ेगा।

कीट छोटे अवश्य हैं, परंतु पृथ्वी पर जीवन की बड़ी कड़ी इन्हीं से जुड़ी है।

मृदा उर्वरता में योगदान: गोबर भृंग जैसे कीट पशुओं के मल को विघटित कर मिट्टी में मिलाते हैं। दीमक मृत लकड़ी और सूखी वनस्पतियों को विघटित कर पुनः मिट्टी का हिस्सा बना देते हैं। इस प्रक्रिया से पोषक चक्र (Nutrient Cycle) बना रहता है और पर्यावरण प्रदूषण कम होता है।

प्राकृतिक शत्रु: लेडीबर्ड बीटल्स, परजीवी ततैया जैसे कीट हानिकारक कीटों को नियंत्रित करते हैं और किसानों को रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भर नहीं होना पड़ता।

पर्यावरण में योगदान

अपघटक (Decomposers): मक्खी, बीटल और दीमक जैसे कीट मृत पादप और प्राणियों का अपघटन करते हैं, जिससे पोषक तत्व पुनः मिट्टी में मिलते हैं।

खाद्य श्रृंखला का हिस्सा: पक्षी, उभयचर, सरीसृप और स्तनधारी जीवों के लिए कीट मुख्य आहार हैं। यदि कीट समाप्त हो जाएँ तो संपूर्ण खाद्य श्रृंखला ढह जाएगी।

मानव जीवन में उपयोग

✲ **रेशम, शहद और लाख:** रेशम के कीट हमें मूल्यवान रेशम देते हैं, मधुमक्खियाँ शहद व मोम, और लाख के कीट लाख प्रदान करते हैं, जिनका उद्योगों में अत्यंत महत्व है।

✲ **औषधीय महत्व:** कीटों के विभिन्न उत्पाद औषधियों में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए, मधुमक्खियों के डंक से बनने वाले यौगिकों का उपयोग गठिया जैसी बीमारियों में किया जाता है।

✲ **वैज्ञानिक अध्ययन में भूमिका:** फल मक्खी (Drosophila melanogaster) आधुनिक आनुवंशिकी (Genetics) के अध्ययन का आधार है। इसके बिना विज्ञान की कई खोजें संभव न होतीं।

भारत में कीट-आधारित खाद्य

भारत के कई जनजातीय और ग्रामीण समुदायों में कीट खाने की परंपरा (Entomophagy) प्रचलित है।

(1) मधुमक्खी व ततैया के लार्वा

✲ झारखंड, नागालैंड, मिज़ोरम और असम के कई आदिवासी समुदाय इन्हें भूनकर या करी के रूप में खाते हैं।

✲ पोषण: प्रोटीन, वसा और विटामिन B समूह से भरपूर।

(2) झींगुर व टिड्डे (Grasshoppers Crickets)

मणिपुर और नागालैंड में लोग इन्हें भूनकर नमक-मिर्च के साथ खाते हैं।

✲ पोषण: उच्च प्रोटीन और कम वसा वाला स्रोत।

(3) **दीमक** (Termites)

ओडिशा, छत्तीसगढ़ और झारखंड में दीमक के पंखों वाले वयस्क पकड़े जाते हैं और इन्हें भूनकर खाया जाता है।

इन्हें पचने में आसान और पौष्टिक माना जाता है।

(4) लाल चींटी की चटनी (Kai Chutney) **और उसकी विशेषता**

उत्पत्ति और GI टैग:

यह पारंपरिक चटनी ओडिशा के मयूरभंज जिले में आदिवासी समुदायों द्वारा बनाई जाती है। इसे 2 जनवरी 2024 को Geographical Indication (GI) टैग प्राप्त हुआ है।

पोषक और औषधीय गुण: वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार, यह चटनी प्रोटीन, कैल्शियम, विटामिन B-12, आयरन, जिंक, मैग्नीशियम, पोटैशियम, तांबा और कई अमीनो एसिड्स से भरपूर होती है। इसे इम्यून सिस्टम मजबूत करने, दृष्टि सुधारने और मस्तिष्क

व तंत्रिका तंत्र के विकास में सहायक माना जाता है। साथ ही, यह सर्दी, बुखार, पाचन विकारों में पारंपरिक रूप से उपयोग की जाती रही है।

(5) **रेशमकीट पुपा** (Silkworm Pupae)

असम, अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड में लोकप्रिय।

इन्हें करी, चटनी या सूखा भूनकर खाया जाता है।

पोषण: प्रोटीन, आयरन और ओमेगा-3 फैटी एसिड्स से भरपूर।

सांस्कृतिक और भविष्य का महत्व

* **सांस्कृतिक परंपरा:** भारत के आदिवासी और पूर्वोत्तर राज्यों में यह रोज़मर्रा का भोजन है।
* **फ्यूचर फूड** (Future Food): संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में कीटों को भविष्य के Superfood के रूप में बताया गया है, जो बढ़ती आबादी की प्रोटीन ज़रूरतों को पूरा कर सकता है।
* आजकल यूरोप और अमेरिका में कीट पाउडर से बनी प्रोटीन बार, पास्ता और बिस्किट भी बिकने लगे हैं।

चुनौतियाँ और संतुलन

जहाँ कई कीट मानव हित में कार्य करते हैं, वहीं कुछ प्रजातियाँ हानिकारक भी होती हैं - जैसे टिड्डी दल (Locust swarm) या मलेरिया फैलाने वाली मादा मच्छर। अतः आवश्यक है कि हम कीट प्रबंधन की संतुलित तकनीकों (Integrated Pest Management) का उपयोग करें।

निष्कर्ष

कीट केवल छोटे जीव नहीं, बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन के स्तंभ हैं। हमें इनके संरक्षण और उचित प्रबंधन पर ध्यान देना चाहिए ताकि प्राकृतिक संसाधनों का संतुलन बना रहे और आने वाली पीढ़ियाँ भी प्रकृति की इस धरोहर से लाभान्वित हो सकें।

यदि कीट न हों, तो धरती पर जीवन की परिकल्पना असंभव है।

प्रेरक प्रसंग

एक समय की बात है । एक नदी में एक महात्मा स्नान कर रहे थे । तभी एक बिच्छू जो पानी में डूब रहा था, उसे बचाते हुए बिच्छु ने महात्मा को डंक मार दिया ।

महात्मा ने उसे कई बार बचाने की कोशिश की । बिच्छू ने उन्हें बार - बार डंक मारा । अंततः महात्मा ने उसे बचाकर नदी के किनारे रख दिया । थोड़ी दूर खड़े यह सब महात्मा के शिष्य देख रहे थे । जैसे ही वे नदी से बाहर आये तो शिष्यों ने पूछा कि जब वह बिच्छू आपको बार - बार डंक मार रहा था तो आपको उसे बचाने की क्या आवश्यकता थी ।

तब महात्मा ने कहा - बिच्छू एक छोटा जीव है, उसका कर्म काटना है, जब वह अपना कर्तव्य नहीं भूला, तो मैं मनुष्य हूँ मेरा कर्तव्य दया करना है तो मैं अपना कर्तव्य कैसे भूल सकता हूँ ।

सीख: इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि मार्ग कितना भी कठिन क्यों न हों । मनुष्य को कभी अपना कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए ।

पर्यावरण हमारी जीवन रेखा

गिरिजा प्रसाद जैना
वरिष्ठ सहायक प्रशासन अधिकारी
कर्मचारी सं. 291549, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, पुणे

प्रस्तावना

पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है। जैसे मछली पानी के बिना नहीं रह सकती, वैसे ही मनुष्य पर्यावरण के बिना नहीं रह सकता। यह हमें हवा, पानी, भोजन और जीवन जीने के लिए आवश्यक सब कुछ देता है। पर्यावरण का अर्थ है - हमारे चारों ओर मौजूद सभी चीज़ें जैसे - पेड़-पौधे, जानवर, नदियाँ, पहाड़, मिट्टी, हवा और इंसान। ये सब मिलकर हमारे जीवन का संतुलन बनाते हैं। अगर यह संतुलन बिगड़ जाए, तो जीवन मुश्किल हो जाता है।

पर्यावरण का महत्व

हम हर दिन जो साँस लेते हैं, वह हवा हमें पेड़ों से मिलती है। जो भोजन हम खाते हैं, वह धरती से आता है। जो पानी हम पीते हैं, वह नदियों और झरनों से मिलता है। सूरज की रोशनी और हवा से हमें ऊर्जा मिलती है। अगर पर्यावरण स्वच्छ और सुरक्षित रहेगा, तभी हम स्वस्थ रह पाएँगे। लेकिन अगर यह दूषित हो गया, तो बीमारियाँ बढ़ेंगी और जीवन संकट में पड़ जाएगा।

पर्यावरण की समस्या

आज के समय में पर्यावरण का संतुलन बहुत बिगड़ गया है। औद्योगिक विकास, शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि ने प्रकृति पर बहुत दबाव डाला है।

1. **पेड़ों की कटाई** - जंगलों को काटकर शहर, सड़कें और फैक्ट्रियाँ बनाई जा रही हैं। इससे पशु-पक्षियों का घर उजड़ रहा है।
2. **प्रदूषण** - गाड़ियों का धुआँ, फैक्टरियों से निकलने वाला कचरा और प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग हमारे पर्यावरण को गंदा कर रहा है।
3. **जल प्रदूषण** - नदियों में कचरा, रसायन और गंदा पानी डालने से पीने योग्य जल कम होता जा रहा है।
4. **वायु प्रदूषण** - आज कई शहरों में हवा इतनी खराब हो गई है कि साँस लेना मुश्किल हो गया है।
5. **ग्लोबल वार्मिंग** - धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिससे हिमालय की बर्फ पिघल रही है और मौसम बदल रहे हैं।

✲ **भारतीय संस्कृति और पर्यावरण**

हमारे भारत की संस्कृति में प्रकृति को माँ के समान माना गया है।

प्राचीन ऋषि-मुनियों ने सदा कहा है -

''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः''

अर्थात् - धरती मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।

हमारे पर्व और त्यौहार भी पर्यावरण से जुड़े हैं।

जैसे -

✲ **वट सावित्री पूजा** में बरगद के पेड़ की पूजा की जाती है।

✲ **तुलसी पूजा** में हर घर में तुलसी का पौधा लगाया जाता है, जो हवा को शुद्ध करता है।

✲ **पोंगल, मकर संक्रांति, ओणम और बैसाखी** जैसे पर्व फसलों और प्रकृति के प्रति धन्यवाद व्यक्त करने के प्रतीक हैं।

यह हमारी भारतीय सोच है कि हम प्रकृति को सिर्फ उपयोग की वस्तु नहीं मानते, बल्कि उसे पूजते हैं। अगर हम इस परंपरा को याद रखें, तो पर्यावरण की रक्षा अपने आप हो जाएगी।

✲ **सरकार और समाज का योगदान**

भारत सरकार ने पर्यावरण संरक्षण के लिए कई योजनाएँ चलाई हैं, जैसे -

- स्वच्छ भारत अभियान
- वन महोत्सव
- हर घर हरियाली योजना
- नमामि गंगे परियोजना

इन योजनाओं का उद्देश्य है - पर्यावरण को साफ रखना और प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखना।

लेकिन सिर्फ सरकार के प्रयास से यह काम पूरा नहीं होगा। समाज और आम नागरिकों की भागीदारी जरूरी है।

अगर हर व्यक्ति यह सोचे कि ''पर्यावरण मेरी जिम्मेदारी है'', तो कोई भी शक्ति हमारी धरती को प्रदूषित नहीं कर सकती।

हम क्या कर सकते हैं

1. **पेड़ लगाएँ और उनकी देखभाल करें।**

हर व्यक्ति साल में कम से कम दो पेड़ लगाए।

2. **प्लास्टिक का उपयोग कम करें।**

कपड़े या जूट के थैले इस्तेमाल करें।

3. **पानी की बचत करें।**

नल खुला न छोड़ें, वर्षा जल को संग्रह करें।

4. **ऊर्जा की बचत करें।**

बिजली और पेट्रोल का अनावश्यक उपयोग न करें।

5. **कचरे का सही निपटान करें।**

गीला और सूखा कचरा अलग रखें।

6. **स्वच्छता बनाए रखें।**

अपने घर, गली और दफ्तर में साफ-सफाई रखें।

7. **बच्चों में पर्यावरण प्रेम जगाएँ।**

बच्चों को पौधारोपण, पुनर्चक्रण और सफाई का महत्व सिखाएँ।

इन छोटे-छोटे कदमों से बड़ा बदलाव लाया जा सकता है।

*** प्राकृतिक आपदाएँ और चेतावनी**

आज भूकंप, बाढ़, सूखा और चक्रवात जैसी आपदाएँ बार-बार हो रही हैं। यह सब प्रकृति की चेतावनी है कि वह असंतुलित हो चुकी है। अगर हमने अब भी पर्यावरण की ओर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाली पीढ़ियाँ केवल इतिहास की किताबों में हरी धरती की तस्वीर देख पाएँगी।

*** औद्योगिक विकास और पर्यावरण का संतुलन**

विकास जरूरी है, लेकिन बिना पर्यावरण के संरक्षण के यह विकास अधूरा है।

अगर फैक्टरियाँ और मशीनें बढ़ेंगी तो उनके साथ हरित तकनीक (Green Technology) का उपयोग भी बढ़ाना चाहिए।

जैसे -

- सौर ऊर्जा (Solar Power)
- पवन ऊर्जा (Wind Energy)
- वर्षा जल संचयन (Rainwater Harvesting)
- कचरे से ऊर्जा बनाना (Waste to Energy)

इससे देश आगे भी बढ़ेगा और पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा।

*** जीवन और पर्यावरण का संबंध**

मनुष्य और प्रकृति एक-दूसरे पर निर्भर हैं। अगर हम प्रकृति का ध्यान नहीं रखेंगे, तो वह भी हमें दंड देगी।

जैसे पेड़ हमें ऑक्सीजन देते हैं, वैसे ही हमें भी उनके लिए कुछ करना चाहिए।

हमारे पूर्वज पेड़ों के नीचे बैठकर पूजा करते थे, नदियों के किनारे आश्रम बनाते थे, क्योंकि वे जानते थे कि सच्चा सुख प्रकृति के साथ रहने में है।

आज का इंसान मोबाइल और मशीनों के बीच रहकर प्रकृति से दूर हो गया है।

अब समय आ गया है कि हम फिर से प्रकृति के पास लौटें, उसकी गोद में कुछ पल बिताएँ और उसे धन्यवाद दें।

*** निष्कर्ष**

पर्यावरण की रक्षा करना सिर्फ एक काम नहीं, बल्कि यह हमारा उत्तरदायित्व है।

जब धरती माँ मुस्कुराएगी, तभी मानवता भी सुरक्षित रहेगी।

हम सबको यह संकल्प लेना चाहिए -

'' मैं धरती को हरा-भरा बनाऊँगा,
पेड़ लगाऊँगा, जल बचाऊँगा,
और आने वाली पीढ़ियों के लिए
स्वच्छ और सुंदर भारत छोड़ जाऊँगा। ''

''पर्यावरण की रक्षा ही सच्ची देशभक्ति है,'' क्योंकि जब हमारा देश ''हरा-भरा'' रहेगा, तभी वह समृद्ध रहेगा।

इंसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है,
क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी हैं
- डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

वो गर्मी की छुट्टियाँ अब फिर से क्यों नहीं आतीं?

संगम

(एक कामकाजी महिला की कलम से)

ज्योति यादव,
वरिष्ठ अनुवादक अधिकारी,
सीमा शुल्क आयुक्तालय, पुणे

कभी-कभी ज़िंदगी की रफ़्तार इतनी तेज़ हो जाती है कि इंसान को ठहरकर साँस लेना भी मुश्किल लगने लगता है। सुबह का अलार्म, बच्चों की जिम्मेदारी, दफ्तर का बोझ, और शाम को फिर घर की देखभाल-इन सबके बीच मेरी ज़िंदगी किसी मशीन जैसी हो गई है। और जब भी मैं इस थकान के बीच थोड़ी राहत की तलाश करती हूँ, तो मेरा मन अनायास ही अपने बचपन की ओर चला जाता है। वही बचपन, जिसमें गर्मी की छुट्टियाँ किसी जादुई संसार से कम नहीं होती थीं।

आज मैं एक कामकाजी महिला हूँ, पर मेरे दिल का एक कोना अब भी उस नन्हीं बच्ची के लिए धड़कता है, जो गर्मी की छुट्टियों का इंतज़ार पूरे साल करती थी। लेकिन मन में अक्सर सवाल उठता है- क्यों वो गर्मी की छुट्टियाँ अब फिर से नहीं आतीं?

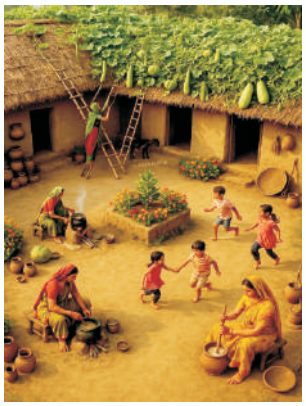

मेरे बचपन में गर्मी की छुट्टियाँ स्कूल के वार्षिक कैलेंडर का सबसे सुंदर अध्याय होती थीं। जैसे ही परीक्षा ख़त्म होती, हम सब भाई-बहनों का चेहरा खिल उठता। स्कूल बैग को अलमारी में बंद कर देना और किताबों को कुछ हफ़्तों के लिए पूरी तरह भूल जाना, यही छुट्टियों की शुरुआत का पहला सुख होता।

सुबह देर तक सोने की आज़ादी, दोपहर में पेड़ों की छाँव में झूला झूलना, आम की फाँकें चूसना और गाँव में रिश्तेदारों के घर जाने की उमंग-ये सब छुट्टियों की पहचान थीं। तब समय मानो ठहर जाता था।

गर्मी की दोपहरें भी अपने में अनोखी थीं। जब धूप बाहर की सड़कों को तपाती थी, हम घर के आँगन में बैठकर दादी-नानी की कहानियाँ सुना करते। वो कहानियाँ केवल मनोरंजन नहीं थीं, बल्कि उनमें जीवन के मूल्य, साहस और सदाचार की शिक्षा छिपी होती।

अगर गर्मी की छुट्टियों की बात हो और आम का ज़िक्र न हो, तो तस्वीर अधूरी रह जाती है। दादी के बगीचे में आम के पेड़ थे। जब गर्म हवाएँ चलतीं और कच्चे आम गिरते, तो हम सब बच्चे उन्हें बटोरने में लग जाते। फिर उन आमों से पना बनता, अचार डाला जाता और घर में एक अलग-सी खुशबू फैल जाती।

शाम को जब माँ आम काटकर परोसतीं, तो हम सब भाई-बहन उसमें हिस्सेदारी को लेकर झगड़ते भी थे। लेकिन उसी झगड़े में छुपी हुई मासूमियत आज याद कर बहुत भली लगती है।

गर्मी की छुट्टियों का एक और आकर्षण था सहेलियों का साथ। मोहल्ले में सारे बच्चे एक साथ खेलते । गुड्डे- गुड़िया की शादी, कभी माँ से कशीदाकारी सीखना, कभी नकली मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाना जैसे खेल घंटों चलते। न मोबाइल था, न टीवी का इतना आकर्षण-बस सादगी भरा बचपन और बेशुमार ऊर्जा।

सूरज ढलते ही गली-गली गूँजती हँसी और दौड़ते पाँव मानो पूरी दुनिया को खुशियों से भर देते। तब कोई थकान नहीं होती थी, बस खेलने और हँसने की ललक रहती।

गर्मी की छुट्टियाँ जैसे रिश्तों को गहराई से जीने का भी समय थीं। हम अक्सर ननिहाल या ददिहाल जाते। वहाँ सभी चचेरे-ममेरे भाई-बहनों से मिलना किसी मेले जैसा अनुभव होता। दिनभर की चहल-पहल, रात को सबका एक साथ छत पर सोना और तारों से बातें करना-ये सब यादें आज भी दिल में ताज़ा हैं।

दादा-दादी, नाना-नानी का स्नेह, उनकी डाँट, और उनके साथ बिताए पल आज के व्यस्त जीवन में ये यादें कहीं खो गई हैं। अब छुट्टियाँ सिर्फ प्लानिंग और शेड्यूल का हिस्सा रह गई हैं, जिनमें रिश्तों की वह सहजता और अपनापन बहुत कम बचा है।

अब जब मैं कामकाजी महिला हूँ, तो छुट्टियों का मतलब कुछ और हो गया है। छुट्टी का दिन अब आराम से ज़्यादा काम का दिन बन जाता है। सुबह बच्चों की पढ़ाई, फिर घर के कामकाज और उसके बाद यदि समय मिला तो खुद को थोड़ा सुकून देने की कोशिश।

अगर गर्मियों में ऑफिस से छुट्टी मिल भी जाए, तो वो असली बचपन वाली छुट्टी नहीं होती। अब छुट्टियाँ अक्सर घरेलू जिम्मेदारियों की लंबी लिस्ट बन जाती हैं। कभी बच्चों की कोचिंग, कभी बाजार के काम, कभी रिश्तेदारों की मुलाक़ात-यानी छुट्टी का मतलब आराम नहीं, बल्कि और ज़िम्मेदारी।

मन में यही सवाल उठता है कि वो गर्मी की छुट्टियाँ अब क्यों नहीं आतीं?असल में छुट्टियाँ अब भी आती हैं, पर बचपन वाली बेफ़िक्री और मासूमियत अब नहीं लौट सकती। तब हम जिम्मेदारियों

से मुक्त थे, हर दिन हमारे लिए नया था और भविष्य की चिंता नाममात्र भी नहीं थी।

आज जब ज़िम्मेदारियों का बोझ कंधों पर है, तो छुट्टियाँ भी उसी बोझ का हिस्सा बन जाती हैं। जीवन ने हमें सिखाया है कि समय केवल हमारा नहीं है, बल्कि परिवार और समाज की अपेक्षाओं से भी बंधा है।

भले ही आज की छुट्टियाँ वैसी नहीं रहीं, पर बचपन की यादें मेरे उस बीते जीवन का सहारा हैं। जब भी थकान या उदासी घेरती है, मैं आँखें बंद कर उन गर्मी की छुट्टियों को याद करती हूँ। उन कहानियों की आवाज़, आम की खुशबू और अपनों की हँसी मुझे आज भी जीने की नई ऊर्जा देती है।

गर्मी की छुट्टियाँ बचपन का सबसे सुंदर उपहार थीं। वे अब दोबारा नहीं आ सकतीं, लेकिन उनकी यादें हमेशा जीवित रहेंगी। आज की व्यस्त जिंदगी में शायद हम उन दिनों को वापस नहीं ला सकते, लेकिन हम अपने बच्चों के लिए वही वातावरण जरूर बना सकते हैं-जहाँ वे भी बेफ़िक्री से खेलें, कहानियाँ सुनें और रिश्तों की मिठास जी सकें।

शायद यही हमारी जिम्मेदारी है कि हम आने वाली पीढ़ी के लिए वो गर्मी की छुट्टियों वाला जादू बचाए रखें।

बिदाई

रोशन हो हर राह आगे, पूरी हो हर चाह
जिंदगी हाथ पकड़ चली, किसकी अब परवाह?

इस गांव से तू निकल पड़ा तो, मिल जाए नया गांव,
इस धूप को गर पार करो तो, मिल जाए सुख की छांव।

कोई किसी का नहीं जहां में, न कोई रखो लगाव;
इतना मन को मत लगाओ कि, मुश्किल हो अलगाव।

इतने साल बिताने पर तो, कहानी कोई बन जाती है,
साख आसमान छू लेती है, जड़ भी पक्की हो जाती है।

आँसू संयत निकल जाते है, मुस्कान धोखा दे देती है,
काल नाम की विचित्र घड़ी, मन ही मन मुसकाती है।

मन ही मन मुसकाती है,और भविष्य लिखती जाती है,
तू फिर आएगा इस सदन में, यही कामना जताती है।

डॉ. पल्लवी जमदग्नि
अनुसंधान अधिकारी (भेषज गुण विज्ञान),
क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पुणे

स्वच्छता है हमारी पहली ज़िम्मेदारी, इसमें हो हम सबकी भागीदारी।

स्वच्छता है हमारी पहली ज़िम्मेदारी ,
इसमें हो हम सबकी भागीदारी।
स्वच्छता है हमारी पहली ज़िम्मेदारी ,
इसमें हो हम सबकी भागीदारी।।
बच्चे को बचपन से पढ़ाओ ,
बीमारी को जड़ से मिटाओ।
स्वच्छता से नहीं कतराओ,
गंदगी को दूर भगाओ।
सारे भारत को जगाओ ,
स्वछता को ही अपनाओ।।
स्वच्छता है हमारी पहली ज़िम्मेदारी ,
इसमें हो हम सबकी भागीदारी।।
स्वच्छ भारत ; स्वस्थ भारत ,
स्वच्छ भारत ; हरित भारत ,
स्वच्छ भारत ; समृद्ध भारत ,
स्वच्छ भारत ; शक्ति शाली भारत ,
स्वच्छ भारत ; श्रेष्ठ भारत ,
जागो भारत ; जगाओ ,
जागो भारत ; जगाओ ,
जागो भारत ।।

श्रीमती श्रुति त्रिपाठी, मुख्य प्रबंधक
पावरग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया, पुणे (शिक्रारापुर)

महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता और आर्थिक सहभागिता

गुमान सिंह मीना, वैज्ञानिक-'एफ'
भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान,
पुणे

भारत में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और वित्तीय समावेशन देश की प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। महिलाएँ केवल परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में भी अहम योगदान देती हैं। कृषि, उद्योग, सेवा और असंगठित क्षेत्रों में उनकी सक्रिय भागीदारी देश की आर्थिक संरचना को मजबूत बनाती है। हालांकि, सामाजिक, कानूनी और वित्तीय बाधाओं के कारण महिलाओं का पूर्ण आर्थिक सशक्तीकरण अभी भी चुनौतीपूर्ण बना हुआ है।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ खेती-किसानी, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, और हस्तशिल्प जैसी गतिविधियों के माध्यम से उत्पादन और पारिवारिक आय में वृद्धि कर रही हैं। महिलाएँ कृषि क्षेत्र जैसे कि बीज बोने, फसल कटाई, अनाज संग्रहण और विपणन जैसे कार्यों में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। उनके इस श्रम से न केवल परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलती है। भारतीय अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा असंगठित क्षेत्र पर निर्भर है, जहाँ महिलाओं की भागीदारी सबसे ज्यादा है। वे घरेलू काम काज, सहायिका, निर्माण श्रमिक, सब्जी विक्रेता, दर्जी, कढ़ाई-बुनाई और हस्तशिल्पकार के रूप में भी कार्यरत हैं। हालांकि, इन कार्यों में उन्हें स्थायी रोजगार, उचित वेतन, सामाजिक सुरक्षा और श्रम अधिकारों की कमी का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार, महिलाएँ समाज और अर्थव्यवस्था दोनों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। यदि उन्हें समान अवसर, शिक्षा और सुरक्षा प्रदान की जाए, तो वे भारत की आर्थिक वृद्धि को और अधिक गति दे सकती हैं।

सरकार की योजनाएँ जैसे स्टैंड अप इंडिया, मुद्रा योजना और स्वयं सहायता समूह महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इन योजनाओं के तहत महिलाएं छोटे व्यवसायों की शुरुआत कर रही हैं, स्वरोजगार में लगी हैं और अपने परिवारों के आर्थिक स्थिति में सुधार ला रही हैं। साथ ही, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 की धारा 13 के तहत यह भी कहा गया है कि हर परिवार में सबसे बड़ी महिला को राशन कार्ड जारी करते वक्त परिवार का मुखिया माना जाएगा, जिससे महिलाओं को कुछ हद तक अधिकार और पहचान मिल रही है। इसके बावजूद भी, पारंपरिक और सांस्कृतिक बाधाओं के कारण, महिलाओं को परिवार और समाज में उतनी स्वतंत्रता नहीं मिल पाती। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, परिवारों में महिलाएं अक्सर मुखिया के रूप में नहीं पहचानी जाती। उन्हें वेतन असमानता, सामाजिक भेदभाव और कार्यस्थल पर असुरक्षा जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

वित्तीय समावेशन

डिजिटल वित्त में उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद, भारत में वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में लैंगिक असमानता अब भी बनी हुई है। महिलाओं के वास्तविक वित्तीय सशक्तीकरण के लिए प्रधानमंत्री जन धन योजना ने महिलाओं को न केवल बैंक खाते उपलब्ध कराए, बल्कि उन्हें सुरक्षित बचत, डिजिटल लेनदेन और वित्तीय योजनाओं तक पहुँच प्रदान की। फिर भी, केवल महिलाओं के नाम पर बैंक खाते खोलना पर्याप्त नहीं है; बल्कि वित्तीय साक्षरता, स्वयं के खाते पर स्वामित्व, और आय पर नियंत्रण सुनिश्चित करना आवश्यक है। देश में 2011 के बाद से महिलाओं द्वारा खाता रखने की संख्या में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। भारत में, सभी बैंक खातों में से 39.2% खाते महिलाओं के हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में यह प्रतिशत 42.2% है, जो शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक है। इस वृद्धि का मुख्य कारण प्रधानमंत्री जन धन योजना है, जिसने देशभर में महिलाओं को बैंकिंग सेवाओं से जोड़कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास किया है। फिर भी, सरकारी आंकड़ों के अनुसार प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत खोले गए 56.04 करोड़ बैंक खातों में से लगभग 23% निष्क्रिय हैं, और कई खातों में शेष राशि नगण्य है। जो खाते सक्रिय हैं, उनमें से अधिकांश खातों को परिवार के पुरुष सदस्य संचालित करते हैं । अतः केवल खाते का होना पर्याप्त नहीं है; महिलाओं को वित्तीय साक्षरता, नियमित उपयोग और बचत की आदत विकसित करने की आवश्यकता है। इसके लिए सरकार, समाज और परिवार को मिलकर महिलाओं को शिक्षित, समर्थ और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कदम बढ़ाने होंगे। जब महिलाएँ बैंकिंग सेवाओं का नियमित और प्रभावी उपयोग करती

हैं, तो यह न केवल उनकी व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति सुधारता है, बल्कि समग्र आर्थिक विकास और सामाजिक समावेशन को भी बढ़ावा देता है।

आज के समय में महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना केवल उनके लिए बैंक खाता खोलने तक सीमित नहीं है। वित्तीय समावेशन तभी सार्थक होता है जब महिलाएँ अपनी कमाई पर पूर्ण नियंत्रण रख सकें और उनके नाम पर मौजूद खातों में ही उनके पैसे सीधे स्थानांतरित किए जाएँ। इस कदम से महिलाओं की स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है, जो उनके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन दोनों में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इसके साथ ही, महिलाओं को अपने बैंक खातों का प्रबंधन करने और बुनियादी वित्तीय सेवाओं-जैसे बचत, लेन-देन, ऋण और निवेश-तक स्वतंत्र पहुँच प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण और वित्तीय साक्षरता अनिवार्य है। इससे महिलाएँ न केवल अपने वित्तीय संसाधनों का बेहतर उपयोग कर पाएंगी, बल्कि आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी आगे बढ़ेंगी।

विवाहित महिलाओं को बैंक खाता खोलने के लिए अपने पति की अनुमति लेनी पड़ती है। इसके अलावा, कमजोर संपत्ति अधिकार और असमान उत्तराधिकार कानून जैसी अन्य बाधाएँ महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता को और सीमित करती हैं। महिलाओं का भूमि स्वामित्व का दर्जा भी उनके वित्तीय समावेशन पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। बचत बढ़ाने के लिए खाता होना आवश्यक है। महिलाओं के पास संपत्ति का स्वामित्व अन्य परिवार के सदस्यों की तुलना में उनकी बचत करने की क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। संपत्ति उनके निर्णय लेने की शक्ति को मजबूत करती है, जिससे वे अधिक बचत कर पाती हैं। साथ ही, महिलाओं का संपत्ति पर स्वामित्व न केवल उनकी व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति को सुधारता है, बल्कि घरेलू और पारिवारिक कल्याण में भी सकारात्मक योगदान करता है। महिलाओं के लिए वित्तीय स्वतंत्रता, बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच और समान अवसर सुनिश्चित करना, समाज और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए लाभकारी है।

चुनौतियाँ और कारण

महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और वित्तीय समावेशन के रास्ते में कई चुनौतियाँ मौजूद हैं। कुछ प्रमुख बाधाएँ इस प्रकार हैं:

1) **सामाजिक और पारिवारिक बाधाएँ:** कई बार महिलाओं को बैंक खाता खोलने या वित्तीय निर्णय लेने के लिए परिवार के सदस्यों की अनुमति की आवश्यकता होती है।

2) **संपत्ति और अधिकारों की असमानता:** कमजोर संपत्ति अधिकार और असमान उत्तराधिकार कानून महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता को सीमित करते हैं।

3) **कार्यबल में असमानता:** महिलाओं की श्रम भागीदारी पुरुषों की तुलना में कम है और लिंग-आधारित वेतन असमानता भी व्यापक रूप से मौजूद है।

4) **निष्क्रिय बैंक खाते:** कई महिलाएं बैंक खाता होने के बावजूद उनका सक्रिय उपयोग नहीं कर पाती हैं। कई ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक शाखाओं की कमी है और अगर हैं भी, तो महिला खातेदारों को बैंक की शर्तों और प्रक्रियाओं को समझने में भी कठिनाई हो सकती है।

5) **परिवार के पुरुषों का नियंत्रण:** अक्सर, महिला खातेदारों के खातों का संचालन परिवार के पुरुष सदस्य करते हैं, जिससे महिला की आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की शक्ति प्रभावित हो सकती है। यह समस्या खासकर पारंपरिक और ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक देखने को मिलती है, जहां महिलाएं आमतौर पर घर के आर्थिक मामलों से बाहर रहती हैं।

समाधान और सुझाव

1) **वित्तीय साक्षरता और प्रशिक्षण:** महिलाओं को अपने बैंक खातों का प्रबंधन करने और वित्तीय सेवाओं तक स्वतंत्र पहुँच प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

2) **संपत्ति पर अधिकार और नियंत्रण:** महिलाओं को संपत्ति और अपनी आय पर नियंत्रण देने से उनकी निर्णय लेने की शक्ति और बचत क्षमता बढ़ती है।

3) **समान अवसर और वेतन:** कार्यस्थल पर समान अवसर सुनिश्चित करना और लिंग-आधारित वेतन अंतर को कम करना आवश्यक है।

4) **सक्रिय बैंकिंग उपयोग को बढ़ावा:** केवल खाता खोलने तक सीमित न रहकर, महिलाओं को खाते का नियमित उपयोग और निवेश/बचत में सक्रिय भागीदारी की दिशा में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

हम सभी के पास समान प्रतिभा नहीं है, लेकिन हमारे पास समान अवसर हैं, अपनी प्रतिभा को विकसित करने के लिए।

- स्व. रतन टाटा

पेड़ के नाम

लघुकथा

श्रीमती कुमुद ककोनिया
विभागीय कलाकार, केंद्रीय संचार ब्यूरो,
प्रादेशिक कार्यालय (महाराष्ट्र एवं गोवा), पुणे

सुबह के वक्त मैं लिविंग रूम में बैठी.. चाय की चुस्कियों के साथ अपनी खिड़की की ग्रिल में रखे, छोटे-छोटे गमलों में लगे मदमस्त झूमते हुए पौधों को प्यार से निहार रही थीं और वो जैसे हवा के झोंके में हिलते-डुलते हुए इठला-इठला कर, अपने अस्तित्व का अहसास मुझे कराने का भरसक प्रयास कर रहे थे।

मैंने जल्दी-जल्दी अपनी चाय खत्म की और खिड़की के पास आकर खड़ी हो गई, फिर गेंदा, मनीप्लांट, जेडप्लांट और तुलसी के पौधों को देखने लगी। इन सबके बीच एक कटहल का पेड़ भी लगा हुआ था। जो जोर-जोर से हिल-हिलकर मुझसे कुछ कहने की कोशिश कर रहा था। मानो कह रहा हो- ये सब तो ठीक है.... कि आपने इन सब पौधों को छोटे-छोटे गमलों में लगाकर, अपनी खिड़की में सजाकर रख लिया है। किन्तु अरे भाई,.... मेरा क्या कसूर है.... मैं इस छोटे से गमले में पेड़ कैसे बनूंगा? उसका प्रश्न तो सही था।

बात दरअसल ऐसी है, कि हमारे कार्यालय में एक महोदय आंध्रप्रदेश से अपने गांव के बगीचे में उगे हुए कटहल को हम सभी के लिए लेकर लाए थे। जो अच्छा पका हुआ स्वादिष्ट और बहुत मीठा था। जिसे खाने के बाद उसके बीज को मैंने अपने घर के गमले में लगा दिया था। और अब वह लगभग दो फुट का पौधा हो गया था। जो अब पौधे से पेड़ बनने के लिए बैचेन था, और उसकी बैचेनी जायज़ भी थी।

मैंने कटहल के पौधे को... जो पेड़ बनने के लिए चिंतित था, प्यार से निहारते हुए और हाथों से उसकी पत्तियों को सहलाते हुए कहा- अरे... तुम दुखी मत हो, खुश हो जाओ.. मैं तुम्हारे लिए एक अच्छी और बड़ी जगह ढूंढती हूं। वह पौधा.. जो पेड़ बनने के लिए व्याकुल था, जैसे अब संतुष्ट हो गया हो। एकदम शांत हो गया। अब वह जोर-जोर से हिल भी नहीं रहा था। बस शनैःशनैः डोल रहा था। जैसे वह आश्वस्त हो गया हो....।

मैंने तुरंत ही अपनी सोसाइटी के माली से फोन पर बात करके उसे गार्डन में लगवाने की व्यस्था की। जब हमने कटहल के पौधे को सही स्थान पर लगाया... तो मेरा मन खुश था, और कटहल का पौधा आनंदित। प्रतीत हो रहा था कि वो आभार प्रदर्शित कर रहा है, धन्यवाद दे रहा है।

मैंने भी उल्हासित होकर मन-ही-मन कहा- एक पेड़ माँ के नाम तो सभी लगा रहे हैं..... लेकिन ये पेड़..... पेड़ के नाम...!

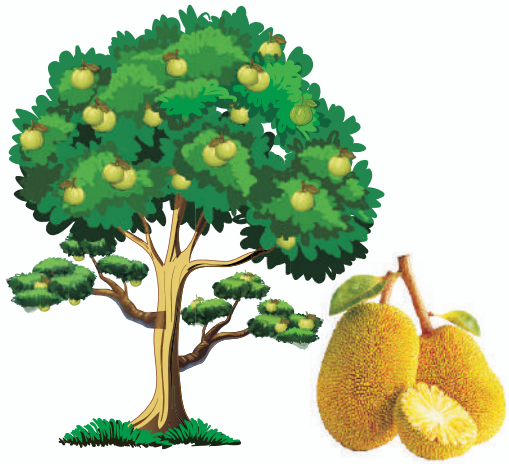

मुट्ठी भर संकल्पवान लोग जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं।

- महात्मा गांधी

देवनागरी लिपि-वैज्ञानिकता और मानकीकरण

श्रीमती अलका पांडेय
परास्नातक शिक्षक, हिन्दी
केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2, आयुध निर्माणी देहू रोड,पुणे

नागरी लिपि का विकास - प्रत्येक भाषा की अपनी एक लिपि होती है जिसमें उस भाषा को लिखा जाता है। लिपि का आधार लिखित संकेत होते हैं जो कि दृश्य व दृष्टिगोचर होते है। हिंदी की लिपि देवनागरी लिपि है । भारत की प्राचीन लिपियों में सिंधु घाटी की लिपि खरोष्ठी लिपि और ब्राह्मी लिपि प्रसिद्ध है। सिंधु घाटी की लिपि चित्राक्षर तथा कुछ ध्वन्याक्षर थी । देवनागरी लिपि का आविष्कार ब्राह्मी लिपि से हुआ।

देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात के राजा जय भट्ट के एक शिलालेख में हुआ है। यह लिपि हिंदी प्रदेश के अतिरिक्त महाराष्ट्र व नेपाल में प्रचलित है । गुजरात में सर्वप्रथम प्रचलित होने से वहाँ के पंडित वर्ग अर्थात नागर ब्राह्मणों के नाम से इसे नागरी कहा गया तथा देव भाषा संस्कृत में इसका प्रयोग होने से इसके साथ देव शब्द जुड़ गया । देवताओं की उपासना के लिए जो संकेत बनाए जाते थे उन्हें देवनगर कहते थे और ये संकेत लिपि के समान थे, वहीं से इसे देवनागरी कहा जाने लगा।

देवनागरी लिपि सुधार और संशोधन - सर्वप्रथम महादेव गोविंद रानाडे ने लिपि सुधार समिति का गठन किया । काका कालेलकर ने अ की बारहखड़ी का सुझाव दिया तथा स्वर ध्वनियों की संख्या को कम कर दिया गया जैसे-अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ। डॉ. श्यामसुंदर दास ने पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करने का सुझाव दिया । जैसे - हिन्दी - हिंदी, कण्ठ - कंठ

श्रीनिवास जी का सुझाव था कि महाप्राण ध्वनियों के स्थान पर अल्पप्राण ध्वनियाँ शामिल कर उनके नीचे कोई चिह्न लगाकर इस्तेमाल किया जाए । हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (5 अक्टूबर 1941) में सुधार हेतु एक बैठक की जिसमें मात्राओं को उच्चारण क्रम में लगाने तथा छोटी इ की मात्रा को व्यंजन के आगे लगाने का सुझाव पेश किया गया। 1947 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित समिति की अध्यक्षता नरेंद्र देव ने की जिसमें निम्न सुझाव पेश किए गए -

क) अ की बारहखड़ी भ्रामक है ।
ख) मात्राएं यथा स्थान रहे परंतु उन्हें थोड़ा दाहिनी ओर लिखा जाए।
ग) अनुस्वार व पंचमाक्षर के स्थान पर बिंदी से काम चलाया जाए ।
घ) दो तरीकों से लिखे जाने वाले अक्षरों में निम्न अक्षरों को स्वीकार किया जाए- अ झ ध भ ल ।
ड)संयुक्त वर्ण क्ष त्र ज्ञ श्र को वर्णमाला में जगह दी जाए।
उपरोक्त सुझावों को कुछ हेर-फेर कर इन्हें स्वीकार कर लिया गया है समय-समय पर इसमें सुधार होते रहे हैं फारसी की नुक्ता युक्त ध्वनियों को भी शामिल कर लिया गया है। कुछ अंग्रेजी के शब्दों को भी शामिल किया गया है ।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता- देवनागरी लिपि पर प्रायः दोषारोपण होता रहा है कि इसमें वर्णों की संख्या अधिक है । परंतु वास्तविकता तो यह है कि यहां वर्णमाला का वर्गीकरण अत्यंत वैज्ञानिक है। इसके वर्ण सभी ध्वनियों को प्रस्तुत करने में सक्षम है। पूरी वर्णमाला पहले स्वर व फिर व्यंजन में वर्गीकृत है। स्वरों का वर्गीकरण भी एक स्वर वर्ण के पश्चात एक दीर्घ वर्ण निश्चित है जैसे अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः।

व्यंजनों का वर्गीकरण कंठव्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य अंत:स्थ ऊष्म, संयुक्त व्यंजन व द्विगुण व्यंजनों के रूप में वर्गीकृत है। पुनः व्यंजनों को अल्पप्राण महाप्राण ,अघोष व सघोष में वर्गीकृत किया गया है। ऐसी विशेषता किसी अन्य लिपि में नहीं पाई जाती ।

देवनागरी लिपि का वर्गीकरण

कंठव्य		क ख ग घ ड.
तालव्य		च छ ज झ ञ
मूर्धन्य		ट ठ ड ढ ण
दंत्य		त थ द ध न
ओष्ठ्य		प फ ब भ म
अंत:स्थ		य र ल व
संयुक्त व्यंजन		क्ष त्र ज्ञ श्र
द्विगुण व्यंजन		ड , ढ़
कुल स्वर	11	
अनुस्वार	1	
विसर्ग	1	
व्यंजन	39	
कुल वर्ण	52	

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के अनुसार, हिंदी वर्णमाला में मूलतः 52 वर्ण हैं, लेकिन 53वें वर्ण के रूप में 'ळ' को शामिल किया गया है। यह एक विशिष्ट व्यंजन है जिसे केंद्रीय हिंदी समिति द्वारा अगस्त 2024 में जोड़ा गया है, जिससे वर्णमाला की कुल संख्या 53 हो गई है।

ळ' का महत्व: 'ळ' एक विशिष्ट व्यंजन है, जो कुछ भारतीय भाषाओं, जैसे कि राजस्थानी और मराठी में पाया जाता है। अब इसका उपयोग 'कुलकर्णी' जैसे शब्दों की जगह 'कुळकर्णी' लिखने के लिए किया जा सकता है,यह एक वैदिक वर्ण है,यह ड़'लड़' और ड़'डड़' के बीच की ध्वनि है।

अघोष वह ध्वनि जिसके उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन नहीं होता ।

सघोष वह ध्वनि जिसके उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन हो जैसे ग घ ज झ आदि।

अल्पप्राण व्यंजन जिसके उच्चारण में श्वास की मात्रा कम निकलती हो।

महाप्राण व्यंजन जिसके उच्चारण में अत्यधिक श्वास निकले । जैसे- फ छ ठ भ ध

संयुक्त व्यंजन

क्ष =क्+ष्+अ ,

त्र=त्+र्+अ ,

ज्ञ=ज्+ञ्+अ

स्वर ध्वनियों के उच्चारण में किसी अन्य ध्वनि की सहायता नहीं लेनी पड़ती परंतु व्यंजन के उच्चारण में स्वर ध्वनियों की सहायता लेनी पड़ती है। देवनागरी लिपि एक अक्षरात्मक लिपि है यह विशेषता अन्य लिपियों में नहीं पाई जाती।

इस लिपि में शब्दों को लिखने के क्रम में स्वर और व्यंजन वर्ण अलग-अलग नहीं लिखे जाते बल्कि संयुक्त होकर पूर्ण अक्षर का निर्माण करते हैं। जैसे कमल या कलम।

अक्षरात्मक लिपि में वर्ण के ऊपर नीचे दाएं -बाएं कहीं भी मात्राओं का प्रयोग हो सकता है परंतु उच्चारण पहले वर्ण का होगा और उसके पश्चात मात्राएं उच्चरित होंगी, जैसे कोमल , कुम्हार, किताब आदि ।

अक्षरात्मक लिपि अक्षर प्रयोग के कारण कम स्थान घेरती है जबकि वर्णात्मक लिपि वर्णों के पहले प्रयोग के कारण समय ,श्रम तथा स्थान सभी दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं है । जैसे

राम	-	RAM
कृष्ण	-	KRISHNA
संभव	-	SMBHAVA

देवनागरी लिपि में सभी ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता है परंतु रोमन लिपि में ऐसा नहीं है।

जैसे ण और न के लिए N अक्षर

द, ड के लिए D अक्षर ।

देवनागरी लिपि में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निश्चित वर्ण है तथा प्रत्येक वर्ण से एक निश्चित ध्वनि भी निकलती है । ऊष्म व्यंजन श अंत:स्थ र् को लेकर सजग रहें तो अंतर स्पष्ट है कि तालव्य श, मूर्धन्य ष व दन्त्य स का प्रयोग अलग-अलग है।

र् ध्वनि के लिए चार वर्ण प्रतीक एक ही वर्ण के चार कोणीय परिवर्तन मात्र है।

जैसे राम , क्रम , कर्म ,ट्रक।

C से 'क ' A से 'अ' ,'आ' तथा' ए ' तीनों ध्वनियाँ निकलती है ।

जैसे - Cake, Cat,Car,Bat

देवनागरी लिपि में प्रत्येक वर्ण के लिए निश्चित उच्चारण है परंतु रोमन लिपि में एक ही वर्ण अलग-अलग शब्दों के साथ अलग-अलग उच्चारण देता है। जैसे Call में C 'क' का उच्चारण देती है और City में C 'स' का।

देवनागरी लिपि में मूक वर्ण (silent letter) जैसी कोई समस्या नहीं है परंतु रोमन लिपि में ऐसी समस्या है। रोमन लिपि में शब्द लिखे कुछ और जाते हैं तथा उच्चरित कुछ और होते हैं जैसे Knowledge में K मूक वर्ण है, W व D भी मूक हैं।

देवनागरी लिपि के सभी वर्णों को लिखना आसान है। देवनागरी लिपि के वर्णों को लिखने के लिए एक पड़ी रेखा, एक खड़ी रेखा और एक अर्द्धवृत्त का सहारा ही काफी होता है ।

इस प्रकार देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है। शिरोरेखा के कारण भी इसकी वैज्ञानिकता स्पष्ट होती है क्योंकि शिरोरेखा के कारण वर्ण व शब्दों के बीच भेद किया जा सकता है ।

देवनागरी लिपि का मानकीकरण

देवनागरी लिपि विश्व की अन्य लिपियों की तुलना में वैज्ञानिक है । किसी भी लिपि के आदर्श होने के लिए निम्नलिखित शर्तें अनिवार्य है

1.वह लिपि दुनिया की किसी भी भाषा को अंतरित करने की क्षमता रखती हो।

2. प्रत्येक ध्वनि के लिए स्वतंत्र वर्ण प्रतीक हो ।

3. किसी वर्ण प्रतीक से एक से अधिक ध्वनि न निकले।

4. शब्दों को लेकर लिपि अर्थभेद न हो ।

5. उस लिपि में भूमंडल की लिपि होने की अर्हता हो।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर देवनागरी लिपि निश्चित तौर पर वैज्ञानिक है। परंतु कुछ समस्याओं के कारण यह मानकीकरण की दिशा में उलझ गई । इसकी मानकता के लिए कुछ प्रयास निम्नलिखित है-

1. शिरोरेखा के प्रयोग को अनिवार्य किया गया है - इसमें वर्णों के बीच भेद किया जा सकता है

शिरोरेखा के अभाव में ध और घ, ख व र ,व तथा म व भ का अंतर

स्पष्ट नहीं हो पाता ।

2. ध्वनियों के उच्चारण में एकरूपता अति आवश्यक है अतः लिपि के वर्णो की द्विरूपता को समाप्त कर देना चाहिए ।

जैसे अ, श्र ,र ,ण, झ ,फ, ल, त्र आदि।

3. संयुक्त वर्णों का प्रयोग संयोग, लेखन व उच्चारण लाघवता व तीव्रता को दर्शाता है इसे भी बरकरार रखा जा रहा है; जैसे क्ष त्र ज्ञ ।

4.वर्णों को संयुक्त करने की प्रक्रिया चाहे अगल-बगल हो या ऊपर - नीचे दोनों ही स्थितियों में वैज्ञानिक है। जैसे मिट्टी या मिट्टी।

5. र् ध्वनि के चारों प्रयोग वस्तुतः अलग-अलग न होकर र के कोणीय परिवर्तन मात्र हैं। इनका प्रयोग हूबहू किया जाता है ।

6. र का चौथा प्रयोग ()मूर्धन्य वर्णों में किया जाता है। राष्ट्र, ट्रक, ड्रम, टुंड्रा।

7. संज्ञा शब्दों केअंत में बड़ी ई का प्रयोग होना चाहिए 'यी' का नहीं। जैसे - भलाई , पिटाई, कमाई ,पढ़ाई आदि ।

8. नासिक ध्वनियों एवं उनमें प्रयुक्त वर्ण प्रतीकों के संयोग को लेकर यदि सजग रहा जाए तो इनमे से किसी प्रयुक्त को हटाने की जरूरत नहीं है ।ये सभी प्रतीक एक दूसरे से अलग व अर्थभेदक है।

नासिक वर्णों को अनुस्वार तथा अनुनासिक में बांटा जाता है । अनुस्वार ध्वनियों के उच्चारण में नाक की भूमिका होती है। जबकि अनुनासिक संकलन करती ध्वनियों के उच्चारण में नाक व मुख दोनों का सहयोग होता है ।

9.अनुस्वार ध्वनियों के उच्चारण में बिंदु के प्रतीक का इस्तेमाल होता है जबकि अनुनासिक ध्वनियों के लिए अर्धचंद्र बिंदु (ँ) का प्रयोग होता है ।

अनुस्वार ध्वनियाँ प्रत्येक वर्ण के पंचमाक्षर के रूप में ही जानी जाती हैं जबकि अनुनासिक ध्वनियाँ अलग-अलग होती हैं ।

10.अनुस्वार ध्वनियों या पंचमाक्षरों के लिए प्रतिस्थापक प्रतीक बिंदी या बिंदु के अलावा कहीं-कहीं अर्द्ध- पंचमाक्षर का प्रयोग भ्रम का कारण हो सकता है परंतु यह प्रयोग वैज्ञानिक है।

जैसे -चंचल-चञ्चल, अंडा-अण्डा, संतोष-सन्तोष आदि।

11.अंग्रेजी के जिन शब्दों में' ज 'ध्वनि का प्रयोग होता है उनके लिए हिंदी की देवनागरी लिपि में अर्द्धचंद्र का प्रयोग किया जा रहा है।जैसे डॉक्टर, ऑफिस, हॉस्टल, बॉल आदि ।

अनुस्वार प्रतीकों का प्रयोग दो परिस्थितियों में संभव नहीं है -

क) यदि अनुस्वार प्रतीक दो पंचमाक्षर चाहे समान हो या असमान वहाँ आए तो अनुस्वार की जगह अर्द्धपंचमाक्षर प्रतीक का प्रयोग किया जाता है । जैसे जन्म, अम्मा, चम्मच आदि ।

ख)यदि किसी पंचमाक्षर के पश्चात अंत:स्थ व्यंजन(य, र, ल, व) आए तो भी अनुस्वार प्रतीक का प्रयोग न होकर पंचमाक्षर का प्रयोग किया जाता है । जैसे -नम्य, अन्वय, सन्मार्ग, आण्विक आदि।

12.अनुस्वार प्रतीक बिंदु तथा अनुनासिक प्रतीक अर्द्धचंद्र बिंदु के बीच स्पष्ट अंतर रहता है । जैसे गाँधी, गंध, हँसी, हंसी ।

13.लेखन में प्रयुक्त चिह्न में पूर्णविराम के लिए देवनागरी लिपि की खड़ी पाई (।) का इस्तेमाल किया जाता है ।

अंको को लेकर भी यही प्रयास रहता है कि रोमन लिपि में बिंदु की तरह होता है।

14. अंकों के लिए भी यही प्रयास होना चाहिए कि रोमन लिपि के अंतरराष्ट्रीय रूप का प्रयोग हो।

रोमन अंक	I,II,III,IV,V,VI,VII,VIII,IX,X
अंतरराष्ट्रीय अंक	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

15.विधि क्रिया एवं व्यय में 'ए 'का प्रयोग ही किया जाता है जैसे - लीजिए, दीजिए, कीजिए, लिए आदि।

अपनी समस्त विशेषताओं के साथ देवनागरी लिपि की सर्वोपरि विशेषता यह है कि इसमें शब्द अपने उच्चारण के अनुरूप हूबहू लिखे जाते हैं । अन्य भाषाओं में इसका अभाव है । आज संगणक की दुनिया ने भी इसकी स्पष्टता और वैज्ञानिकता को स्वीकार किया है। **विश्व प्रतिष्ठित व इतनी समृद्ध लिपि भारतवर्ष की एक महान उपलब्धि है जिस पर हमें गर्व है।**

कर्म वो आईना है, जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है।
अत: हमें कर्म का एहसानमंद होना चाहिए।

- विनोबा भावे

संयुक्त परिवार-समय की माँग

राजकुमार शिवाजी पवार
तकनीशियन
भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, पुणे

प्रस्तावना :- भारतीय संस्कृति की जड़े बहुत गहरी और व्यापक हैं। यहां की परंपराओं में पारिवारिक व्यवस्था को विशेष स्थान दिया गया है। प्राचीन काल से ही भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली समाज की रीढ़ मानी जाती रही है। आज जहाँ आधुनिकता, शहरीकरण के प्रभाव से लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व देने लगे हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक विघटन, एकाकीपन, मानसिक तनाव और पारिवारिक कलह जैसी समस्याएँ भी बढ़ रही है। ऐसे समय में संयुक्त परिवार व्यवस्था का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। यही कारण है कि इसे 'समय की माँग' कहा जाता है।

संयुक्त परिवार की परिभाषा:- संयुक्त परिवार वह है जिसमें एक ही घर की छत के नीचे दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची, भाई-बहन और उनके बच्चे मिलकर रहते हैं। सबकी आय, श्रम और साधन सामूहिक होते हैं और सभी सदस्य एक-दूसरे के सुःख-दुःख में सहभागी बनते हैं। संयुक्त परिवार का मूल मंत्र है-''**सर्वे भवन्तु सुखिनः अर्थात् सभी साथ मिलकर सुखी रहें।**''

संयुक्त परिवार की विशेषताएँ:-

1) **सामूहिक जीवन-** सभी सदस्य साथ मिलकर रहते हैं, साथ खाते-पीते है और जीवन की जिम्मेदारियों को साझा करते हैं।

2) **आर्थिक सहयोग-** कमाने वाला चाहे कोई भी हो, खर्च और आय सबकी सामूहिक संपत्ति मानी जाती है।

3) **संस्कार और परंपरा का संरक्षण-** बच्चे दादा-दादी से परंपरागत ज्ञान और मूल्य सीखते हैं।

4) **स्नेह और अपनापन-** हर सदस्य को भावनात्मक सहारा मिलता रहता है।

5) **सामूहिक निर्णय-** बड़े-बुजुर्गों की सलाह और अनुभव से परिवार का मार्गदर्शन होता है।

संयुक्त परिवार के लाभ:-

1) **आर्थिक सुरक्षा-** संयुक्त परिवार में आय और खर्च साझा होने से किसी भी एक सदस्य पर बोझ नहीं पड़ता।

2) **बच्चों का विकास-** बच्चें जब दादा-दादी और अन्य परिजनों के सानिध्य में बड़े होते हैं, तो संस्कार, अनुशासन और शिक्षा सीखने का अवसर मिलता है।

3) **बुजुर्गों की देखभाल-** संयुक्त परिवार में वृद्ध जन व्यक्ति को, सम्मान, प्रेम और सुरक्षा मिलती है।

4) **मानसिक शांति-** संयुक्त परिवार में रहने से सहयोग, सुरक्षित वातावरण और एक-दूसरे का साथ मिलने के कारण मानसिक शांति बनी रहती है।

5) **सामाजिक प्रतिष्ठा-** संयुक्त परिवार समाज में एकता, सहयोग और परंपरा का प्रतीक माना जाता है। इसलिए ऐसे परिवारों की सामाजिक प्रतिष्ठा सामान्यतः अधिक होती है।

संयुक्त परिवार की चुनौतियाँ:-

1. **मतभेद और कलह-** अलग-अलग विचारों के टकराव से झगड़े हो सकते हैं।

2. **आर्थिक असमानता-** यदि कोई कम-ज्यादा कमाता है तो, मन में असंतोष पनप सकता है।

3. **व्यक्तिगत स्वतंत्रता की कमी-** हर निर्णय सामूहिक होने से कभी-कभी व्यक्ति की स्वतंत्रता प्रभावित होती है।

संयुक्त परिवार-समय की मांग क्यों ?

1) **संकट के समय सहारा-**महामारी, आर्थिक मंदी या अन्य संकटों में संयुक्त परिवार सबसे बड़ा सहारा है।

2) **मूल्य और संस्कारों का संरक्षण-**आधुनिकता की आंधी में केवल संयुक्त परिवार ही भारतीय संस्कारों को बचा सकता है।

3) **बच्चों के लिए सुरक्षित माहौल-**संयुक्त परिवार बच्चों को सही दिशा, अनुशासन और भावनात्मक सुरक्षा देता है।

4) **वृद्धों का सम्मान-**संयुक्त परिवार में वृद्धजन को वह मान-सम्मान मिलता है जो छोटे परिवारों में संभव नहीं है।

5) **सामाजिक एकता-**यह व्यवस्था सामाजिक सद्भाव, सहयोग और भाईचारे को मजबूत करती है।

समाधान और उपाय:-

1) शिक्षा प्रणाली में संयुक्त परिवार के महत्व को समझाना चाहिए।

2) युवाओं को यह सीखाना आवश्यक है कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामूहिक जीवन साथ-साथ चल सकते हैं।

3) बुजुर्गों को आधुनिक सोच अपनानी चाहिए और नई पीढ़ी को भी उनका सम्मान करना चाहिए।

उपसंहार:-

संयुक्त परिवार केवल एक पारिवारिक व्यवस्था नहीं बल्कि आधार और संस्कृति की धरोहर है। यह व्यवस्था हमें न केवल आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा देती है बल्कि भावनात्मक मजबूती भी प्रदान करती है।

आज जब संसार भौतिकवाद, प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ की दौड़ में उलझा है, तब संयुक्त परिवार का महत्व और भी अधिक हो गया है। यह सच है कि समय के साथ इसकी संरचना में परिवर्तन आ सकता है, लेकिन इसका मूल-भाव साथ रहना, साथ निभाना और साथ बढ़ना सदैव जीवित रहेगा।

इसलिए कहा जा सकता है कि-संयुक्त परिवार केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की आवश्यकता है। यही समय की सच्ची मांग है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समाज

(एक सांस्कृतिक-वैज्ञानिक दृष्टि से शोध-लेख)

अंकित अग्रवाल
कनिष्ठ कार्यशाला प्रबंधक (तकनीकी)
गोला बारूद निर्माणी, खड़की, पुणे

''विज्ञान मानव जीवन को सरल बनाता है,
पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण उसे सार्थक बनाता है।''

आज का युग विज्ञान का युग कहलाता है। विज्ञान ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र-कृषि, उद्योग, चिकित्सा, शिक्षा, संचार, परिवहन और रक्षा-में अभूतपूर्व परिवर्तन किए हैं। मानव ने अंतरिक्ष में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है, असाध्य रोगों का उपचार संभव हुआ है और पूरी दुनिया एक वैश्विक ग्राम में परिवर्तित हो गई है। किंतु यह भी सत्य है कि केवल वैज्ञानिक आविष्कार और तकनीकी प्रगति से समाज पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो सकता। समाज को विवेकशील, न्यायपूर्ण और मानवीय बनाने के लिए **वैज्ञानिक दृष्टिकोण** होना अनिवार्य है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का वास्तविक अर्थ :

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अर्थ केवल प्रयोगशालाओं, यंत्रों या जटिल सूत्रों तक सीमित नहीं है। इसका व्यापक अर्थ है-तर्कशील सोच, प्रमाणों पर विश्वास, जिज्ञासा की भावना, प्रश्न पूछने का साहस और सत्य को स्वीकार करने की मानसिकता। वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्यक्ति को यह सिखाता है कि वह किसी भी बात को अंधविश्वास या परंपरा के आधार पर न माने, बल्कि विवेक और अनुभव के आधार पर उसकी सत्यता की जाँच करे। ''**तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्नाः**'' अर्थात् केवल परंपरा, सुनी-सुनाई बातों या अंधश्रद्धा के आधार पर किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना चाहिए, बल्कि तर्क, अनुभव और प्रमाण के आधार पर ही सत्य की खोज करनी चाहिए।

भारतीय समाज और वैज्ञानिक सोच

भारतीय समाज प्राचीन काल से ज्ञान-विज्ञान की भूमि रहा है। आर्यभट्ट, चरक, सुश्रुत जैसे विद्वानों ने वैज्ञानिक चिंतन को बढ़ावा दिया। किंतु समय के साथ-साथ समाज में अनेक रूढ़ियाँ, अंधविश्वास और कुरीतियाँ भी पनप गईं। ग्रह-नक्षत्रों के भय, चमत्कारों पर अंधविश्वास, झाड़-फूँक द्वारा रोग उपचार जैसी प्रवृत्तियाँ आज भी समाज में देखी जाती हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण इन सभी अवैज्ञानिक मान्यताओं को चुनौती देता है।

''अंधविश्वास छोड़ो, विज्ञान से नाता जोड़ो।''

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक समानता

वैज्ञानिक दृष्टिकोण सामाजिक समानता की भावना को भी सुदृढ़ करता है। जाति, लिंग, धर्म या वर्ग के आधार पर भेदभाव का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। विज्ञान यह सिद्ध करता है कि सभी मनुष्य जैविक रूप से समान हैं। अतः वैज्ञानिक सोच सामाजिक न्याय, समान अवसर और मानव गरिमा को बढ़ावा देती है। स्त्री-पुरुष समानता, शिक्षा का अधिकार और मानवाधिकारों की अवधारणा वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ही देन हैं।

संविधान में वैज्ञानिक दृष्टिकोण

भारतीय संविधान ने भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के महत्व को स्वीकार किया है। संविधान के अनुच्छेद 51A(h) में प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बताया गया है कि वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और सुधार की भावना का विकास करे। यह स्पष्ट करता है कि वैज्ञानिक सोच केवल व्यक्तिगत विकास का नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का आधार है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक सुधार

इतिहास साक्षी है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने समाज में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। सती प्रथा, बाल विवाह, छुआछूत और अशिक्षा जैसी कुरीतियों का अंत तर्क, शिक्षा और वैज्ञानिक सोच के माध्यम से संभव हुआ । राजा राममोहन राय, महात्मा फुले, डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे समाज सुधारकों ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सामाजिक सुधार का सशक्त माध्यम बनाया।

''सोच बदलेगी, तभी समाज बदलेगा।''

आधुनिक चुनौतियाँ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण

आधुनिक डिजिटल युग में विज्ञान और तकनीक ने जहाँ एक ओर सुविधाएँ बढ़ाई हैं, वहीं दूसरी ओर नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। सोशल मीडिया पर फैलने वाली अफवाहें, फर्जी समाचार और छद्म-विज्ञान समाज को भ्रमित कर रहे हैं। ऐसे समय में वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्यक्ति को सत्य और असत्य में भेद करने की शक्ति प्रदान करता है।

''सत्यमेव जयते''

सत्य की विजय तभी संभव है, जब समाज तर्क, विवेक और प्रमाण के मार्ग पर चले।

पर्यावरण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण :

आज पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन जैसी समस्याएँ मानव जाति के सामने गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल भावनाओं से नहीं, बल्कि वैज्ञानिक सोच, शोध और जिम्मेदार व्यवहार से ही संभव है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलना सिखाता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि विज्ञान समाज को साधन प्रदान करता है, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण उसे सही दिशा देता है। यदि हमें एक सशक्त, समतामूलक, विवेकशील और मानवीय समाज का निर्माण करना है, तो वैज्ञानिक दृष्टिकोण को शिक्षा, प्रशासन और दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाना होगा।

''विज्ञान अपनाएँ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण जगाएँ-
तभी बनेगा सशक्त और समृद्ध समाज।''

बदलती जलवायु में स्वास्थ्य सुरक्षा: पूर्वानुमान से उपचार तक

डॉ. सत्यबान बिशोई रत्न
प्रमुख जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं का कार्यालय
भारत मौसम विज्ञान विभाग, शिवाजीनगर, पुणे- 5

जलवायु परिवर्तन अब केवल बढ़ते तापमान या पिघलते हिमनदियों तक सीमित विषय नहीं रह गया है; यह एक गंभीर जन-स्वास्थ्य चुनौती बन चुका है, जो लोगों के दैनिक जीवन को सीधा प्रभावित कर रहा है। बढ़ता तापमान, वर्षा के बदलते स्वरूप, चरम मौसम घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति और बिगड़ती वायु गुणवत्ता मानव स्वास्थ्य पर लगातार प्रभाव डाल रही हैं, विशेषकर बच्चों, बुजुर्गों, बाहर काम करने वाले श्रमिकों और गरीबी में जीवन यापन करने वाले लोगों पर। घातक लू (heatwave) से लेकर बाढ़ के बाद फैलने वाले रोगों तक, मौसम और जलवायु आज स्वास्थ्य जोखिमों के सबसे प्रभावशाली कारणों में शामिल हो चुके हैं, खासकर निम्न-आय वर्ग के समुदायों में। हाल के वर्षों में भारत ने अधिक लू की घटनाएँ, तीव्र बाढ़, लंबे सूखे और संक्रामक रोगों के बदलते स्वरूप का अनुभव किया है। ये जलवायु-संबंधी खतरे स्वास्थ्य को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में प्रभावित करते हैं-जैसे लू लगना (heat stress), लोगों में पोषण की स्थिति में गिरावट, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ और डेंगू, मलेरिया जैसे वाहक-जनित (vector-borne) रोगों का प्रसार।

मौसम की परिस्थितियाँ कई माध्यमों से स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। अत्यधिक गर्मी से शरीर में पानी की कमी और थकान (heat exhaustion) की संभावना रहती है, जबकि बाढ़ और भारी वर्षा से चोटें लगने, पेयजल के दूषित होने और जल-जनित रोगों के फैलने का खतरा बढ़ जाता है। तापमान और आर्द्रता में बदलाव मच्छर-जनित रोगों जैसे डेंगू और मलेरिया के प्रसार को प्रभावित करते हैं, वहीं कुछ मौसमीय परिस्थितियाँ वायु को प्रदूषित कर सकती हैं, जिससे श्वसन संबंधी बीमारियाँ बढ़ जाती हैं। शारीरिक प्रभावों के अलावा, चरम मौसम घटनाएँ मानसिक स्वास्थ्य पर भी लंबे समय तक असर डालती हैं, जिनमें तनाव, चिंता और आघात शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन के साथ जैसे-जैसे ये जोखिम बढ़ रहे हैं, वैसे-वैसे ऐसे उपायों की आवश्यकता भी बढ़ रही है, जो समाज को नुकसान होने के बाद प्रतिक्रिया देने के बजाय पहले से तैयारी करने में सक्षम बनाएँ।

यहीं पर जलवायु सेवाओं (Climate Services) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। जलवायु सेवाओं में मौसम और जलवायु से जुड़ी जानकारी-जैसे पूर्वानुमान, अग्रिम चेतावनियाँ और जोखिम आकलन-का उपयोग कर स्वास्थ्य सहित जलवायु-संवेदनशील क्षेत्रों में समय पर योजना बनाने और उचित कदम उठाने के लिए किया जाता है। स्वास्थ्य अधिकारियों के लिए यह जानकारी उन समय अवधियों की पहचान करने में सहायक होती है, जब स्वास्थ्य जोखिम सामान्य से अधिक बढ़ जाते हैं। इससे अस्पतालों और आपातकालीन सेवाओं को पहले से तैयार किया जा सकता है तथा जनता के लिए समय पर विशेष निर्देश जारी किए जा सकते हैं। संकट उत्पन्न होने से पहले कार्रवाई को संभव बनाकर, जलवायु सेवाएँ आपातकालीन प्रतिक्रिया से हटकर रोकथाम पर आधारित दृष्टिकोण को बढ़ावा देती हैं, जिससे स्वास्थ्य सुरक्षा अधिक प्रभावी और किफायती बनती है।

लू की घटनाओं की सटीक चेतावनी इस बात का स्पष्ट उदाहरण हैं कि जलवायु सेवाएँ किस प्रकार जीवन बचा सकती हैं। भारत में लू सबसे घातक मौसमीय खतरों में से एक है और जलवायु परिवर्तन के कारण इसकी आवृत्ति, तीव्रता और अवधि में वृद्धि हुई है। शहरी क्षेत्रों में कंक्रीट की सतहें, हरित क्षेत्रों की कमी और अधिक जनसंख्या घनत्व, ये सब अत्यधिक गर्मी के प्रभाव को और भी बढ़ा देते हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) अब मौसमी पूर्वानुमान जारी करता है, जो अत्यधिक गर्मी की संभावना का संकेत देते हैं, और जैसे-जैसे गर्मी का मौसम नज़दीक आता है मासिक और साप्ताहिक पूर्वानुमान अपडेट भी प्रदान किए जाते हैं। स्थानीय स्तर पर, जिला-स्तरीय लू की चेतावनियाँ कई दिन पहले जारी की जाती हैं, जिससे प्रशासन को निवारक कदम उठाने का अवसर मिलता है। कई शहरों में ये पूर्वानुमान ताप प्रबंधन योजना (heat action plan) का आधार बनते हैं, जिनके अंतर्गत बाहरी कामकाजी समय में बदलाव, अस्पतालों की तैयारी और अत्यधिक गर्मी से सुरक्षित रहने के लिए जन-जागरूकता जैसे कदम उठाए जाते हैं। किसी कामगार का सुबह जल्दी काम शुरू करना या किसी शहरी नागरिक का दोपहर की भीषण गर्मी में बाहर निकलने से बचना-ऐसी छोटी-छोटी सावधानियाँ भी समय पर मिली चेतावनी से जीवन-रक्षक सिद्ध हो सकती है।

जलवायु सेवाएँ संक्रामक रोगों के प्रबंधन में भी उपयोगी सिद्ध हो रही हैं, विशेषकर डेंगू जैसे मच्छर-जनित रोगों के संदर्भ में। डेंगू का प्रसार मौसम की परिस्थितियों से गहराई से जुड़ा होता है, क्योंकि

वर्षा के बाद बने ठहरे हुए पानी में, गर्म और आर्द्र वातावरण में मच्छर तेजी से पनपते हैं। वर्षा और तापमान में बदलावों की निगरानी करके स्वास्थ्य विभाग अधिक जोखिम वाली अवधि की पहचान कर सकते हैं, स्वास्थ्य सतर्कता तथा तैयारियों को मजबूत कर सकते हैं। जलवायु जानकारी प्रशासन को समय रहते कीटनाशक छिड़काव की योजना बनाने, जलभराव वाले क्षेत्रों की सफाई करने और संभावित मरीज़ों की संख्या में वृद्धि के लिए अस्पतालों को तैयार रखने में मदद करती है। जब जलवायु आँकड़ों को स्वास्थ्य निगरानी प्रणालियों के साथ जोड़ा जाता है, तो रोग फैलने के बाद प्रतिक्रिया देने के बजाय लक्षित और अग्रिम रोकथाम संभव हो जाती है।

बाढ़ एक और बड़ी स्वास्थ्य चुनौती प्रस्तुत करती है। यद्यपि डूबने और चोट लगने जैसे बाढ़ के तात्कालिक प्रभाव अच्छी तरह ज्ञात हैं, लेकिन स्वास्थ्य जोखिम अक्सर बाढ़ का पानी उतरने के काफी समय बाद तक बने रहते हैं। दूषित जल स्रोत, बाधित स्वच्छता प्रणालियाँ और क्षतिग्रस्त स्वास्थ्य सुविधाएँ डायरिया और अन्य संक्रमणों के फैलने का कारण बन सकती हैं। भारी वर्षा और बाढ़ के लिए अग्रिम चेतावनियाँ प्रशासन को संवेदनशील आबादी को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाने, पेयजल स्रोतों की सुरक्षा करने, आवश्यक दवाओं का भंडारण करने और चिकित्सा दलों को पहले से तैनात करने में सक्षम बनाती हैं। ये कदम बाढ़ के दौरान और उसके बाद स्वास्थ्य जोखिमों को काफी हद तक कम कर देते हैं, विशेषकर बच्चों और बुजुर्गों के लिए।

जलवायु सेवाओं की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि जानकारी लोगों तक ऐसे रूप में पहुँचे जिसे वे समझ सकें और जिस पर वे कार्रवाई कर सकें। आजकल पूर्वानुमान और चेतावनियाँ मोबाइल ऐप्स, एसएमएस अलर्ट, टेलीविजन, रेडियो, सोशल मीडिया और सामुदायिक घोषणाओं जैसे कई माध्यमों से साझा की जा रही हैं। स्थानीय भाषाओं में सरल संदेश विशेष रूप से कमजोर समुदायों तक पहुँचने के लिए आवश्यक हैं। जीवन बचाने के लिए वैज्ञानिक सटीकता के साथ-साथ विश्वसनीयता, स्पष्टता और समयबद्ध संचार भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं।

वैश्विक स्तर पर, अग्रिम चेतावनी प्रणालियों के महत्व को संयुक्त राष्ट्र की Early Warnings for ll पहल के माध्यम से मान्यता दी गई है, जिसका उद्देश्य 2027 तक पृथ्वी के हर व्यक्ति को अग्रिम चेतावनी प्रणालियों से सुरक्षित करना है। इस पहल में स्वास्थ्य को एक प्रमुख घटक के रूप में शामिल किया गया है, जिसमें मौसम विज्ञान संस्थानों और स्वास्थ्य प्राधिकरणों के बीच बेहतर सहयोग, जलवायु जानकारी तक बेहतर पहुँच और कमजोर आबादी पर विशेष ध्यान देने पर जोर दिया गया है।

महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं। जलवायु और स्वास्थ्य से जुड़े आँकड़े अक्सर अलग-अलग रूप में संचालित किए जाते हैं, स्थानीय स्तर पर क्षमताओं को और मजबूत करने की आवश्यकता है और कई क्षेत्रों में अग्रिम चेतावनियों की समान पहुँच अब भी सुनिश्चित नहीं हो पाई है। इन अंतरालों को कम करने के लिए वैज्ञानिकों, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, नीति-निर्माताओं और समुदायों के बीच निरंतर सहयोग आवश्यक होगा। आगे की राह में, सार्वजनिक स्वास्थ्य योजना में जलवायु सेवाओं का एकीकरण, सामुदायिक तैयारी को मजबूत करना और जलवायु-अनुकूल स्वास्थ्य प्रणालियों का निर्माण अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

पृथ्वी के बढ़ते तापमान और जलवायु परिवर्तन के कारण, मौसम से जुड़ी जानकारी अब केवल एक वैज्ञानिक उपकरण नहीं रह गई है- यह एक जन-स्वास्थ्य आवश्यकता बन चुकी है। चाहे वह लू की चेतावनी हो जो लोगों को सावधानी बरतने के लिए प्रेरित करे, डेंगू के प्रकोप को रोकने में सहायक जलवायु जानकारी हो, या स्वास्थ्य जोखिमों को कम करने वाले बाढ़ पूर्वानुमान-जलवायु सेवाएँ प्रतिदिन जीवन की रक्षा कर रही हैं। मौसम और जलवायु जानकारी का विवेकपूर्ण उपयोग करके समाज संकट-प्रबंधन से आगे बढ़कर जोखिम-निवारण की ओर कदम बढ़ा सकता है और सभी के लिए एक अधिक स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य का निर्माण कर सकता है।

केवल एक विचार को अपना लक्ष्य बनाओ और सभी कुविचार छोड़कर
केवल उसी के बारे में सोचो, सफलता तुम्हारे कदम जरूर चूमेगी
- स्वामी विवेकानंद

कृतघ्नता

श्री उपेंद्र धोंडे
केंद्रिय भूमि जल बोर्ड,
राज्य इकाई कार्यालय, पुणे

बैजू बावरा एक कुशल संगीतज्ञ थे, मंदिर में उनके साथ रहने से 'गोपाल' ने भी गायकी में सफलता प्राप्त की थी। एक बार मंदिर में राज्य के प्रधान आए थे। उन्होंने गोपाल की आवाज सुनी, गाना खत्म होने के बाद उन्होंने गोपाल से अकेले में कहा, ''तुम राजा के पास चलो, राजा ने तुम्हारा गाना सुना तो तुम्हें जीवन में सब कुछ मिल जाएगा।''

फिर एक दिन गोपाल इस लालच में आकर चुपचाप मंदिर छोड़कर चला गया। राजदरबार में जाकर गोपाल ने ऐसा गाया कि राजा प्रसन्न होकर उससे पूछा, ''तुम्हें गाना किसने सिखाया?'' इस पर गोपाल ने कहा,''मैंने यह सुन-सुनकर, निरीक्षण करके सीखा'', मुझे विशेष रूप से किसी ने नहीं सिखाया। इस पर राजा ने कहा, ''वाह, मतलब आपको जन्मजात संगीत विद्या प्राप्त है, आज से आप हमारे दरबार के राजगायक हैं, आपको यहां सभी सुविधाएं दी जाएंगी।''

उधर बैजू बावरा गोपाल के अचानक चले जाने से बेचैन और चिंतित थे। कुछ समय बाद किसी ने उन्हें बताया कि गोपाल राजधानी में है। इसलिए वे राजधानी में गए। वहां उन्हें गोपाल के सुर सुनाई दिए। गोपाल की आवाज पहचानकर बैजू दरबार में अधीर होकर पहुँचे और गोपाल का गाना शुरू रहते ही उसे खुशी से गले लगा लिया और कहा कि उसने सिखाई हुई विद्या का बहुत अच्छा उपयोग किया है, उसकी प्रशंसा की। दरबारी आश्चर्यचकित हो जाते हैं। गोपाल से पूछा जाता है,''ये कौन हैं? इन्होंने तुम्हें संगीत सिखाया?'' इस पर गोपाल कहता है कि नहीं, ''मैं इन्हें नहीं जानता।''

लेकिन गोपाल को पता नहीं होता कि राजा बैजू बावरा को पहचानते हैं। वह गोपाल से जानबूझकर कहते हैं कि अगर तुम इन्हें नहीं पहचानते तो ठीक है, लेकिन वे कहते हैं कि इन्होंने तुम्हें संगीत सिखाया है। चलो तो फिर एक परीक्षा ले लेते हैं, तुम दोनों के बीच गायन की प्रतियोगिता हो जाए।

बैजू कहते हैं, ''गोपाल से कैसी प्रतियोगिता, वह तो मेरे बेटे जैसा है।'' लेकिन विलासी जीवन जीने की आदत, राजगायक के पद का अहंकार और राजधानी में मिलने वाले मान-सम्मान के कारण गोपाल पूरी तरह कृतघ्न हो चुका होता है। वह कहता है,'' महाराज, मुझे यह प्रतियोगिता स्वीकार है।''

अब राजा के आदेश से दोनों को प्रतियोगिता करनी पड़ा। बैजू बावरा हमेशा की तरह गाने लगे, देखते ही देखते पूरा दरबार मंत्रमुग्ध हो गया, वे स्वर जब कानों में पड़ रहे थे तब गोपाल की आवाज कांपने लगी, सुर बिगड़ने लगे और वह सिर झुकाकर शांत हो गया। उसकी हालत देखकर बैजू उसके पास गए और बोले, ''गोपाल, तुम अच्छा गा सकते हो, प्रतियोगिता समझकर मत गाओ, राजदरबार के मान-सम्मान या अपमान की चिंता करके मत गाओ, ऐसा समझो कि तुम मंदिर में मेरे सामने बैठे हो और गाओ।''

लेकिन राजा को सब कुछ समझ में आ गया था। राजा ने गोपाल को सत्य छुपाना, झूठ बोलना, उपकार करने वाले के प्रति कृतघ्न होना इन अपराधों के लिए हाथी के पैरों तले कुचलने की सजा सुनाई। बैजू बावरा ने बहुत विनती की लेकिन राजा सुनने को तैयार नहीं था, सजा तो होनी ही थी। इस पर बैजू बावरा राजा से प्रतियोगिता में जीते हुए पुरस्कार के बदले एक मांग रखते हैं। वे यह नहीं कहते कि गोपाल की सजा माफ कर दी जाए, क्योंकि राजा सुनने वाला नहीं था। इसके बजाय वे राजा से कहते हैं ''कल मैदान में गोपाल पर हाथी छोड़े जाने के समय मुझे बस वहां गाना गाने की अनुमति होनी चाहिए।'' राजा यह विनती स्वीकार कर लेते हैं।

अगले दिन मैदान में गोपाल पर हाथी छोड़ा जाता है और ठीक उसी समय बैजू बावरा अपना गाना शुरू करते हैं। उस गाने से हाथी की हिंस्रता शांत हो जाती है और वह गोपाल का प्राण नहीं लेता। उल्टा वह मस्त होकर सिर हिलाते हुए बैजू बावरा के सुरों का साथ देता है। गायन समाप्त होने पर बैजू बावरा हाथी की सूंड पर प्यार से हाथ फेरते हैं और उसे जाने के लिए कहते हैं, हाथी शांतिपूर्वक चला जाता है। अब बैजू बावरा महाराज से कहते हैं, ''महाराज, हाथी भी गोपाल का प्राण लेना नहीं चाहता, कृपया आप भी गोपाल की यह सजा माफ कर दें।''

कृतघ्न गोपाल के प्रति बैजू बावरा का प्रेम देखकर राजा भावुक हो जाता है और गोपाल की सजा माफ कर देता है। यह सारा प्रसंग देखकर उपस्थित जनता स्वतःस्फूर्त होकर कहती है, ''वास्तव में वही आदर्श शिक्षक है, जो कृतज्ञ और कृतघ्न दोनों प्रकार के विद्यार्थियों पर समान प्रेम करता है और अपने कृतघ्न विद्यार्थी की पद, पैसा, प्रसिद्धि, पुरस्कार की लालसा के कारण बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, इसलिए उस पर नाराज न होकर सदैव उसका कल्याण ही सोचता है, धन्य हैं बैजू बावरा।''

यह कहानी पढ़कर अब तक जीवन में जिन्होंने समय-समय पर हमें ज्ञान, मार्गदर्शन और अवसर देकर प्रगति का रास्ता दिखाया, साथ ही जलशिक्षक के रूप में दूसरों को मार्गदर्शन/मदद करने की बुद्धि और अवसर दिलाया, उन सभी के प्रति कृतज्ञता की भावना उमड़ आई और इसके अलावा सहज जलबोध अभियान की पूरी यात्रा में जो-जो लोग कृतघ्न हुए, उनके प्रति भी मन में दया और संवेदना उत्पन्न हुई ।

वास्तव में, सच्चा शिक्षक कभी भी अपने विद्यार्थियों की सफलता का श्रेय स्वयं लेने की कोशिश नहीं करता, लेकिन जब सफल विद्यार्थी अपने शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता रखते हैं, तभी वे वास्तव में सफल होते हैं। बाकी उन्होंने जो प्राप्त किया वह सफलता नहीं, केवल स्वार्थ है।

''अतीत को भूलकर दूसरों को कम आंकने लगा, वही एक कृतघ्न माना जाए''।

दीवार के उस पार

श्री विकाश कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
नवोदय विद्यालय समिति, क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे

गाँव के आख़िरी छोर पर एक पुराना, विशाल घर था। मिट्टी की सौंधी खुशबू से भरा वह आँगन, बीचों-बीच खड़ा बूढ़ा नीम का पेड़ और बरामदे में रखी दादाजी की लकड़ी की आरामकुर्सी-सब मिलकर जैसे एक कहानी कहते थे। यह घर था रामप्रसाद जी का, जिनकी तीन पीढ़ियाँ उसी छत के नीचे रहती थीं।

सुबह जब सूरज की पहली किरण आँगन में पड़ती, तो दादी की मधुर आवाज़ के साथ दिन की शुरुआत होती-'' उठो बच्चों, सूरज दादा आ गए!''

रसोई से छन-छन की आवाज़ आती, चूल्हे पर चाय खौलती, और बच्चे दादी के आँचल से लिपटकर पराठे खाने की जिद करते। घर में हँसी थी, अपनापन था और एक अजीब-सी तसल्ली थी कि चाहे बाहर कितनी भी आँधी आए, यह घर सबको संभाल लेगा।

रामप्रसाद जी के दो बेटे थे-बड़ा बेटा राघव और छोटा बेटा सुरेश। राघव शहर में नौकरी करता था। उसकी पत्नी निशा पढ़ी-लिखी और महत्वाकांक्षी थी। वह चाहती थी कि उनके बच्चे अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ें, शहर के माहौल में बड़े हों।

दूसरी ओर सुरेश गाँव में ही रहकर खेती संभालता था। उसकी पत्नी सीमा सरल स्वभाव की थी। उसे लगता था कि संयुक्त परिवार में ही असली सुख है।

समय धीरे-धीरे बदलने लगा।

राघव जब शहर से लौटता, तो उसे गाँव की सादगी में अब कमी दिखने लगी। निशा को लगता कि उसकी स्वतंत्रता बंधनों में कैद है। छोटी-छोटी बातों पर मतभेद होने लगे-रसोई का खर्च, बच्चों की पढ़ाई, खेती की आमदनी

एक दिन रसोई में बात इतनी बढ़ गई कि निशा ने कह दिया-'' हमें अलग रहना होगा। अब यह सब संभव नहीं।''

उस एक वाक्य ने जैसे पूरे घर की नींव हिला दी।

दादी ने चुपचाप सब सुना। रात को उन्होंने रामप्रसाद जी से कहा, हमने तो हमेशा इन्हें साथ रहने की सीख दी थी कहाँ चूक गए? रामप्रसाद जी की आँखें नम थीं, पर वे चुप रहे।

कुछ ही महीनों में वह दिन आ गया, जब घर के आँगन में मजदूर आए। ईंटें रखी गईं। और देखते-देखते उसी आँगन के बीच एक दीवार खड़ी हो गई-जिस आँगन में कभी बच्चे साथ खेलते थे, वहाँ अब दो हिस्से हो गए थे।

नीम का पेड़ दीवार के बीचों-बीच था। उसकी एक डाल इस ओर झुकी थी, दूसरी उस ओर। जैसे वह भी समझ नहीं पा रहा था कि किस ओर अपना साया दे।

त्योहार आए, लेकिन रौनक खो गई।

दीवाली पर दोनों घरों में दीये तो जले, पर दादी का दिया बुझा-बुझा-सा रहा। होली पर रंग तो उड़े, पर दिलों के बीच की दूरी और गहरी हो गई।

बच्चे भी समझने लगे थे कि अब चाचा-चाची के घर जाने से पहले दरवाज़ा खटखटाना पड़ता है।

एक रात अचानक रामप्रसाद जी की तबीयत बिगड़ गई। दोनों बेटे भागते हुए उनके पास पहुँचे। उनकी साँसें उखड़ रही थीं।

उन्होंने काँपते हाथों से दोनों बेटों का हाथ पकड़ा और कहा-'' घर दीवारों से नहीं बनता बेटा अगर दिलों में दरार आ जाए, तो महल भी खंडहर बन जाते हैं...''

आँखों से दो बूँद आँसू बह निकले और अगले ही क्षण उनकी पकड़ ढीली पड़ गई।

उस रात पहली बार राघव और सुरेश एक-दूसरे के गले लगकर फूट-फूटकर रोए। उन्हें एहसास हुआ कि जिस 'स्वतंत्रता' और 'अलग पहचान' की तलाश में वे निकले थे, उसने उनसे उनकी जड़ों की छाँव छीन ली। अगले दिन उन्होंने मजदूर बुलाए। आँगन की दीवार तोड़ी जाने लगी। हर गिरती ईंट जैसे उनके अहंकार को तोड़ रही थी।

जब दीवार पूरी तरह गिर गई, तो नीम का पेड़ फिर से खुलकर दिखने लगा। बच्चे उछलते हुए एक-दूसरे के घर भागे। दादी ने बरसों बाद सुकून की साँस ली।

राघव ने शहर जाने का विचार छोड़ दिया। उसने तय किया कि बच्चों को आधुनिक शिक्षा मिलेगी, पर जड़ों से जुड़े रहकर। सुरेश ने भी भाई के साथ मिलकर खेती और छोटा व्यवसाय शुरू करने का निश्चय किया।

घर फिर से हँसी से भर गया।

लेकिन इस बार सबके दिलों में एक डर भी था-कि कहीं फिर से कोई दीवार न खड़ी हो जाए।

कहानी का संदेश:

संयुक्त परिवार केवल परंपरा नहीं, एक भावनात्मक सुरक्षा कवच है। समय के साथ बदलाव जरूरी है, पर रिश्तों की कीमत पर नहीं। क्योंकि जब परिवार टूटता है, तो केवल घर नहीं, कई दिल भी बिखर जाते हैं।

जीवनः एक पावन यात्रा

स्वाती पाखरे
निजी सहायक,
नवोदय विद्यालय समिति, पुणे संभाग ।

जीवन एक पावन यात्रा है, इसे अपना कर्तव्य समझकर पूरा कीजिए। दुःख-सुख और लाभ-हानि को सहजता से स्वीकार करना ही सच्चा जीवन है। यह जीवन एक संघर्ष है, इससे कभी भागना नहीं, बल्कि हर चुनौती को जीत में बदलना ही वीरता है। हमेशा याद रखना कि जीवन में कभी पूर्ण विराम नहीं आता, क्योंकि अंत ही एक नया आरंभ है।

मंज़िल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में सच्ची जान होती है। पंखों के होने से कुछ नहीं होता, हौसलों से ही ऊँची उड़ान होती है। जब राहों में मुश्किलें आएँ, तो समझो कि तुम्हारी हिम्मत और बढ़ने वाली है। हवाओं ने लाख कोशिशें कीं, मगर विश्वास के चिराग आंधियों में भी निरंतर जलते रहे।

सावधान रहना, क्योंकि रेत पर बने बनावटी आशियाने कभी नहीं टिकते। यह जीवन क्षणभंगुर है, जैसे समुद्र की लहरें उठकर उसी में विलीन हो जाती हैं। सच्चा घर ईंट-पत्थरों से नहीं, बल्कि प्रेम, संस्कारों और नेक ख्यालों वाले परिवार से बनता है। पर्वत की ऊँचाई से महानता अपनाओ और सागर की लहरों से अपने संकल्पों का फैलाव करना सीखो।

यदि सूरज की तरह चमकने की चाह है, तो तुम्हें रोज़ उगना और तपना पड़ेगा। सफलता तो केवल मेहनत करने वालों पर ही फ़िदा होती है, बस निडर होकर अपने पथ पर आगे बढ़ते रहो।

सुंदर शरीर लेकर जन्म लेना माता-पिता की ओर से हमें मिली एक अनमोल भेंट होती है।

लेकिन एक अच्छे व्यक्तित्व के रूप में जीना हमारी अपनी पहचान होती है।

जीवन में निष्ठा और सिद्धांतों से जो मिलता है, वही जीवन की जड़ें में शेष रहता है।

बाकी सब कुछ नियति की घटाव में धीरे-धीरे खो जाता है। स्वस्थ रहो खुशहाल रहो और नेक राह पर चलो...

यह कैसा बदलाव है

यह कैसा बदलाव है
गंगा कोई नदी नहीं
वह गंगा मां कहलाती
हम सब उसे पूजते हैं
वह मोक्षदायिनी हमारी है
उसे नदी समझकर
हम दूषित करते जा रहे
यह कैसा बदलाव है ।।
वट और पीपल यह वृक्ष नहीं है
उन्हें देव तुल्य हम मानते हैं
हम जल देते ,पूजन करते
वह जीवन दाता हमारे हैं
हम आज उसी को काट रहे हैं
यह कैसा बदलाव है ।।
पहाड़ को पत्थर नहीं
गोवर्धन उसको मानते हैं
उसकी पूजा अर्चना करते
उसको अपना रक्षक मानते हैं
हम आज उसी को तोड़ रहे
यह कैसा बदलाव है ।।
मात-पिता सिर्फ मानव नहीं
वह भगवान हमारे हैं
चारों धाम उनके चरणों में
वह सुख के धाम हमारे हैं
वह वृद्ध होकर वृद्ध आश्रम जाएं
यह कैसा बदलाव है ।।
मानव ने मानव का जन्म लिया
पर मानवता उसमें नहीं बची
यह कैसा बदलाव है।।

श्रीमती कविता श्रीवास्तव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका हिंदी
केन्द्रीय विद्यालय के.रि.पु.बल, तलेगाँव पुणे

विश्वास की कीमत

सलीम बदशाह जे. नगरकट्टी,
स्टेनो, प्रशिक्षण अनुभाग
नवोदय विद्यालय समिति, क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे

रमन एक समर्पित विद्यालय शिक्षक थे। तीन दशकों से अधिक समय तक उन्होंने अनुशासन, ईमानदारी और निष्ठा का जीवन जिया। उनके लिए विद्यालय हमेशा पहले स्थान पर रहा; पारिवारिक समारोह भी अक्सर दूसरे स्थान पर आते थे। वे मानते थे कि युवा मनों को आकार देना ही उनका सच्चा उद्देश्य है।

उन्होंने और उनकी पत्नी ने अपने तीनों बेटों का बड़े प्यार और परिश्रम से पालन-पोषण किया। रमन ने उन्हें सर्वोत्तम शिक्षा देने के लिए अथक मेहनत की। समय के साथ, तीनों बेटे उच्च शिक्षित, समाज में सम्मानित और आर्थिक रूप से संपन्न पेशेवर बन गए।

सन् 2000 में जब रमन सेवानिवृत्त हुए, तो उन्हें ₹25 लाख की सेवानिवृत्ति राशि मिली। अपनी जीवनभर की बचत से उन्होंने एक साधारण दो-मंज़िला घर बनवाया। एक मंज़िल किराए पर दे दी और दूसरी पर अपनी पत्नी के साथ शांतिपूर्वक रहने लगे। चूँकि उन्हें पेंशन नहीं मिलती थी, उन्होंने ₹15 लाख एक राष्ट्रीयकृत बैंक में सावधि जमा (एफडी) में रख दिए और उससे मिलने वाले नियमित ब्याज से संतुष्ट थे।

जीवन शांत था - तभी एक परिचित व्यक्ति उनके घर आने लगा।

वह व्यक्ति रोज़ आने लगा। चाय, बातचीत और सलाह के माध्यम से उसने धीरे-धीरे रमन का पूरा विश्वास जीत लिया।

एक दिन उसने कहा, 9% बैंक ब्याज से क्यों संतुष्ट रहना? मेरे साथ रियल एस्टेट में निवेश कीजिए। मैं आपको सालाना 24% दूँगा - हर महीने 2%। आपका भविष्य सुरक्षित हो जाएगा।

प्रस्ताव आकर्षक लगा। उस पर पूरा भरोसा करके रमन ने ₹10 लाख निवेश कर दिए। कुछ महीनों तक ब्याज नियमित आता रहा। उत्साहित होकर रमन ने अपनी पत्नी के सोने के आभूषण भी उसे दे दिए, जब उसने कहा कि इससे और अधिक लाभ मिलेगा।

फिर एक दिन वह व्यक्ति गायब हो गया।

रमन की सारी बचत चली गई। पत्नी के गहने भी चले गए। वर्षों की तपस्या और त्याग एक पल में समाप्त हो गए।

इस आघात ने उन्हें भीतर से तोड़ दिया। उनके बेटे, जो अपनी-अपनी ज़िंदगी में व्यस्त थे, बहुत कम सहारा दे पाए। फिर कोरोना महामारी आई और रमन का निधन हो गया। उनकी पत्नी अकेली और आर्थिक रूप से असुरक्षित रह गईं।

तीनों बेटों ने तय किया कि वे माँ को बारी-बारी से अपने पास रखेंगे - हर तीन महीने एक बेटे के साथ। शिक्षित और संपन्न होने के बावजूद वे माँ को आशीर्वाद नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी की तरह देखने लगे। स्थिति वैसी ही हो गई जैसी एक हिंदी फ़िल्म में दिखाई गई थी।

एक दिन जब वे एक प्रसिद्ध मंदिर जाने की योजना बना रहे थे, माँ ने धीरे से कहा कि वे भी साथ चलना चाहती हैं।

उन्होंने उत्तर दिया,'' माँ, आप पिताजी के साथ पहले ही जा चुकी हैं और उन्हें घर पर छोड़कर चले गए।''

बाद में जब वे बीमार पड़ीं, तो उन्हें उनके बेटे के अस्पताल में भर्ती कराया गया। सांत्वना देने के बजाय उनसे इलाज के खर्च के लिए उनकी सोने की अंगूठी देने को कहा गया। अंगूठी ले ली गई - और उसके साथ उनका अंतिम स्वाभिमान भी।

अपने अकेलेपन में वे रोती रहीं - खोई हुई संपत्ति के लिए नहीं, बल्कि खोए हुए संस्कारों के लिए।

यह कुछ परिवारों की कठोर सच्चाई है। एक व्यक्ति जिसने ईमानदारी और निष्ठा से अपना पूरा जीवन विद्यालय को समर्पित कर दिया- दिन-रात काम किया, कई बार अपने परिवार और व्यक्तिगत आवश्यकताओं की अनदेखी की-अंत में पेंशन सुरक्षा के बिना संसार से विदा हो गया। तीन शिक्षित और स्थापित संतानों के होते हुए भी उसकी पत्नी आज सम्मान और देखभाल के लिए संघर्ष कर रही है।

दु:खद निष्कर्ष यह है:

बुढ़ापे में आर्थिक सुरक्षा के बिना जीवनभर का समर्पण अंततः कष्ट का कारण बन सकता है।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत के विकास में विज्ञान की अहम भूमिका

श्री दयाल राम सैनी,
सहायक अनुभाग अधिकारी (सामान्य),
सीएसआईआर-एनसीएल, पुणे

प्रस्तावना:-

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत के विकास में विज्ञान की अहम भूमिका रही है। विज्ञान ने हमेशा विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। वर्तमान भूमंडलीकृत और उदारीकृत बाजार तथा तकनीक निर्देशित है। चाहे ऊर्जा, चिकित्सा अथवा स्वच्छ जल एवं वायु की बात हो या परिवहन, प्रबंधन अथवा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की। सभी किसी न किसी रूप में विज्ञान पर व्यापक रूप से निर्भर है। दूसरे शब्दों में, विकास के लगभग सभी स्तरो पर विज्ञान की आवश्यकता है।

आधुनिक समाज को दिशा देने, प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन, अनुप्रयोग तथा आर्थिक विकास में विज्ञान का योगदान अति विशिष्ट है। इसका सीधा सा अर्थ ये हुआ कि विज्ञान को प्रत्यक्ष तथा गहरा सम्बन्ध सतत विकास से है।

सतत विकास में विज्ञान की भूमिका:-

सतत विकास में विज्ञान की भूमिका को प्रदर्शित करने वाले कारकों में से कुछ विशिष्ट कारक निम्नलिखित प्रकार से है। इन कारकों पर बल देकर विज्ञान के माध्यम से सतत विकास को प्रबल किया जा सकता है।

सतत विकास के लिए क्षमता निर्माण:-

जैसा कि विदित है, सतत विकास में मानव पूंजी का स्थान सर्वोपरि है। विभिन्न वित्तीय संस्थानों द्वारा खासकर विकासशील देशों में वैज्ञानिक अवसंरचनाओं के विकास के लिए सहायता दी जानी चाहिए। साथ ही विशेष रूप से विश्वविद्यालय के स्तर पर अनुसंधान कार्यक्रम चलाये जाने चाहिए ।

नई पीढ़ी के प्रशिक्षण में निवेश:-

आधुनिक अनुसंधान विज्ञान के विकास का आधार स्तम्भ है। इसके अतिरिक्त दीर्घकालिक आर्थिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि गणित एवं विज्ञान को बढ़ावा दिया जाये इतना ही नहीं, दक्षता उन्नयन के लिए निजी क्षेत्र की इकाइयों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की भी अत्यधिक आवश्यकता है।

सूचनाओं की पहुँच में वृद्धि:-

वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के साथ-साथ नई तकनीकों के बारे में जानकारी के निचले स्तर पर पहुँचना आवश्यक है। इस कारण राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर सूचना नेटवर्क का विस्तार किया जाना चाहिए । सूचनाओं को तार्किक बनाने के लिए सतत विकास के विभिन्न मानकों की पहचान तथा उनका उपयोग करने के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास किया जाना अपेक्षित है।

निर्णय लेने की प्रक्रिया के वैज्ञानिक आधार का सुदृढ़ीकरण:-

नीति निर्धारण में विज्ञान का सहयोग सदैव लाभकारी होता है। इसके लिए प्रत्येक स्तर पर विज्ञान और नीति निर्धारण की प्रक्रिया को जोड़ने के लिए प्रावधान किये जाने चाहिए। अतः नीति निर्धारकों तथा वैज्ञानिकों एवं अनुसंधान कर्ताओं के बीच सीधी बातचीत का होना अनिवार्य है।

सतत विकास हेतु आवश्यक क्षमताए:-

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से सतत विकास को प्राप्त करने के लिए लोकतांत्रिक व्यवस्था में विभिन्न क्षमताओं को विकसित करना आवश्यक है। ये आवश्यक क्षमताएं निम्नलिखित प्रकार से है।

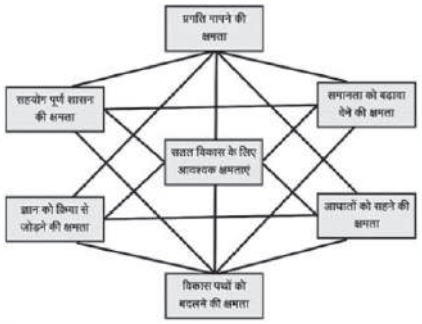

चित्र:- सतत विकास के लिए आवश्यक क्षमताएं

उपसंहार:-

विज्ञान से होने वाले लाभों के प्रति समाज में जागरूकता लाने और वैज्ञानिक सोच पैदा करने के उद्देश्य से समाज के विभिन्न अंगो में सांमजस्य के साथ विभिन्न कार्यक्रम चलाये जाने की आवश्यकता है जिससे सतत विकास को और अधिक क्षमता के साथ प्रबल रूप में आगे बढ़ाया जा सके । हालही में सतत विकास के लिए वैश्विक स्तर पर रणनीति के निर्धारण हेतु जी-20 शिखर सम्मेलन जो कि भारत में सम्पन्न हुआ है उसमें विभिन्न विषयों चर्चा की गई जिसमें से कुछ मुख्य विषय निम्न प्रकार से है।

* वैश्विक स्तर पर कृषि से संबंधित समस्याओं को दूर करने के लिए तकनीकी सहायता का आदान प्रदान ।
* संसाधनीय उत्पादकता में वृद्धि के लिए एक कार्य-योजना का निरूपण

उपरोक्त विषय पर चर्चा से यह निष्कर्ष निकलता है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मानव जीवन के सतत विकास में न केवल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं बल्कि एक आवश्यक घटक भी है।

संयोग से संगम

हिन्दी-महाराष्ट्रियन सांस्कृतिक संगम की यह कविता उन सभी को समर्पित है, जो दो अलग संस्कृतियों के बीच सिर्फ अंतर नहीं, अपनापन ढूंढते हैं। एक हिन्दी भाषी उत्तर भारतीय बेटी, जो विवाह के पश्चात अब महाराष्ट्र की बहू है, उस स्त्री की व्यक्तिगत यात्रा के जरिए भारत की विविधता में एकता का एक उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मैं गिलकी-तुरई सी सादी-2, तुम तीखट से चटक प्रिय
मैं इंदौरी जलेबी-पोहा, तुम कान्दे पोहे तर्री-दार प्रिय
मैं आलू-बोंडा प्याज़-कचौड़ी-2, तुम वड़ा-पाव और कांदा-भज्जी
मैं तरल बूँदी का रायता, तुम कोशिंबिर से घट्ट प्रिय,
कैसे मानू एकत्व, मानू कैसे एकसार प्रिय??

मैं टिक्कड़, लिट्टी, दाल-बाटी-2 - तुम रस्से संग भाकरी,
मैं मावे की गुझिया, तुम करंजी नारल वाली,
हलवे को कहो 'शीरा'-2, कहते चिरौंज़ी को ही हलवा प्रिय,
मेरी प्यारी रबड़ी को तुमने बना दिया बासुंदी प्रिय ।
कैसे मानू एकत्व, मानू कैसे एकसार प्रिय??

मैं पश्चिमी विक्षोभ सी थरथर-2, तुम कोंकण की शाम प्रिय
मैं विशाल नर्मदा सी कल-कल, तुम बाँधों में सिमट लिए
मैं बर्फीली सर्द हवाओं से जूझी-2, तुम बस गुलाबी ठंड जिये
मैं लू थपेड़ों से तपती, तुम शीतल हवाओं के झोंके
मैं सरसों गेहूँ धान की खेती, तुम ज्वार ईख की शेती,
कैसे मानू एकत्व, मानू कैसे एकसार प्रिय ??

मैं टेसू पलाश महुआ के जंगल-2, तुम घाटों की हरितिमा प्रिय
मैं सुकुचाई सी घरेलू लड़की, तुम सशक्त बेबाक़ प्रिय
तुम्हारी बोली थोड़ी खड़ी सी-2, मेरी उर्दू के लहजे में लिपटी
कितना ही अंतर मैं ढूँढी, लिपि दोनों की एक प्रिय,
किसको अंतर मैं मानू, और मानू किसको मैं भेद प्रिय??

मुझमें राई नृत्य सी लचक-2, तुम्हें लावनी की गति भायी
मैं नार चन्देरी में लिपटी, तुम्हें रास पैठनी आई
तुम छत्रपति के शौर्य में पले-2,
तो मैं भी रानी झाँसी और अहिल्या देवी होलकर
चंद्रशेखर, सुखदेव के साथ हुये तो अमर राजगुरु भी प्रिय,
किस बात का मैं अंतर मानू, और मानू किसको मैं भेद प्रिय?

तुम पूजो तुलजा, भवनी-2 - मैं हूँ जगदंबा शक्ति की उपासक,
मैं पूजूं ओंकार, महाकाल, - तुम त्र्यंबक, भीमा, घृष्णेश के साधक ।
है भगत दोनों ही शिव के-2 - फिर किस बात का भेद, प्रिय,
किस बात का अंतर मैं मानू, और किसको जानूं मैं भेद, प्रिय?

मैं गाऊं राम, कृष्ण के भजन-2, तुम विट्ठल के अभंग प्रिय,
मैं जगन्नाथ पुरी की रथयात्रा, तुम पंढरपुर वारी के संग चले
तुम गणपति के पंडाल में-2 और मैं दुर्गा की झांकी,
साईं दर्शन करने तो हम सब आ मिलते शिर्डी में प्रिय,
ना मैं कोई अंतर जानूँ और ना मानू कोई भेद प्रिय,
ना मानू कोई भेद प्रिय !

संस्कृति का भेद, अगर प्रेम से देखा जाए,
तो विविधता नहीं, समृद्धि लगती है। धन्यवाद

डॉ. स्मृति गुप्ता,
वैज्ञानिक-डी,
भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान, पुणे

कुछ तो लोचा है - विज्ञान, पर्यावरण और मानवता

बुरा मत मानिएगा, पर कुछ तो लोचा है,
सुविधाओं के साथ-साथ, सिरदर्द भी पोषा है।

सड़कें चौड़ी हुईं, गाड़ियाँ लाखों आईं,
पर ट्रैफिक जाम में फँसकर, जान आधी घबराई।
दीवारें हज़ार, पर रिश्ता कोई न रहा,
लोग कहते हैं- यही तरक़्क़ी है भैया!

सबके बच्चे अब हैं विदेशों में रहते
जीवनभर की कमाई से आलिशान घर हैं बनते
पर बुजुर्ग यहाँ अकेले में हैं चौकीदारी करते ।
जब पड़ोसी कहे - आपने बहुत अच्छी किस्मत पाई।
तो मन कहे जाके पैर फटे न विवाई, सो का जाने पीर पराई? ।

नदी के रास्तों पर इमारतें चढ़ीं,
प्रकृति की साँसें दीवारों में गढ़ीं ।
उत्तर भारत में बाढ़ ने सबको चौंकाया,
कहीं सूखा, कहीं जल ने कहर बरपाया ।

जंगल कटे, जानवर भागे, पक्षी हुए बेघर,
आईटी पार्क के लिए उजाड़े सैकड़ों एकड़ जंगल ।
यदि न रुका विकास का यह तांडव,
भविष्य में बचेगा बस गंदगी में लिपटा मंजर ।

नेता बोले - इससे विदेशी मुद्रा आएगी,
भारत देश की जीडीपी और बढ़ाएगी ।
जानवर, पक्षी, कीट, गिलहरी; तितली, मेंढक कीट, तितहरी
इनसे क्या है हमें फ़ायदा? धरती पर तो चलेगा हमारा क़ायदा!

सूरज देता रोशनी, फिर भी बल्ब जलता है,
मौसम सुहाना, फिर भी एसी चलता है।
फॉसिल फ्यूल घटाने का भाषण रोज़ सुनाते हैं,
और उसी मीटिंग की पार्किंग में सौ गाड़ियाँ सजाते हैं।

गाँव वाले बोले - हम भी कम कहाँ,
शहर जैसा सुख हमें भी चाहिए भाई!
अनाज क्यों उगाएँ, क्यों पसीना बहाएँ,
हम भी क्यों न राशन कार्ड से ही अनाज खायें।

किसान मेहनत कर शुद्ध अनाज क्यों उगाएँ,
जब सभी को लगे दवाइयाँ शुद्ध भोजन से सस्ती,
और उनके शुद्ध अनाज की कोई नहीं हस्ती,
सारे रोज़गार शहर में और उनके उत्पादों के दाम भँवर में।
अस्पताल बढ़े, बीमारियाँ भी बढ़ी,
आईटी फैली, पर अपनापन न गढ़ी।
मोबाइल पर टाइपिंग... सबको दिखाई देता है,
पर असली हाल-चाल कोई किसी से नहीं लेता है।

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस छपड़ फाड़ उड़ गया,
नेचुरल इंटेलिजेंस सीधा चलना भी भूल गया।
मिट्टी को कह दिया गंदा, प्लास्टिक विहीन बना सच्चा धंधा ।
क्या यही है विज्ञान? 'या है ''लोचा महान ।''

विज्ञान ने दी रफ्तार नई, एआई आया, चाँद पर बस्ती बनी,
पर धरती माँ का हाल खस्ता,
प्लास्टिक का बोझ हर साँस में है बसता ।
फैक्टरियाँ विस्फोटक धुआँ उगलती,
अंधाधुंद कीटनाशक है कैंसर बुलाती,
डॉक्टर बोले -कीमो ले लो भाई!
पेट बोला-बेहतर है ज़हर खा लो भाई!

जल, भोजन, हवा, अनाज का विकास कौन पूछे,
पहले बच्चे हँसते-खेलते जन्म लेते थे सच्चे ।
अब बिना IVF, सिज़ेरियन या फ़र्टिलिटी ट्रीटमेंट के,
धरती पर पाँव तक न रखते बच्चे ।

बच्चों के सू-सू पोटी से है बचना,
डायपर से है गहरा रिश्ता रखना।
डायपर के ख़र्चे में दो बच्चे पल जाते थे, पर वो जीडीपी थोड़े बढ़ाते थे!
डायपर कितना उपयोगी है - हर दो घंटे में बदला जाता है,
बच्चों से दूर होने के बाद, बेजुबान जानवरों के मुंह में जाते नजर आता है।
तीर्थों को भी न रहने दिया, मंदिरों को प्लास्टिक का अड्डा बना दिया।
निर्मल पर्वत प्रदेश ढके कचड़े से,
विकास करना है भाई कहकर,
हर गाँव-शहर में प्लास्टिक के ढेर सजा दिए ।

भविष्य में तीर्थयात्री पाएँगे, कचरे के ढेर में स्नान का अनुभव,
हँसते-हँसते रोते रहेंगे सब ।
बच्चे न खेल पाएँगे मिट्टी में,
सपने देखेंगे VR गॉगल से सुनहरी धरती का, घुटते बंद कमरे में ।

अपने विज्ञान और ज्ञान का अहंकार भी न ही करें,
प्रकृति की कोरोना वाली खाँसी किसको नहीं याद होगी ।
शुद्ध जल, मिट्टी और भोजन के बिना, नैतिकता का पेड़ कैसे पनपे भाई?
कहाँ मिले हमें बीज इसका, जब धरती माँ ही बीमार है?
अगर ध्यान न रखा अपनी धरती माँ का
भविष्य में बरसेगी सिर्फ़ प्लास्टिक की बारिश,
मछलियों की जगह मिलेगा कचड़े का सलाद,
और बच्चों की हँसी के बदले, ऑक्सीजन मास्क में फँसी आवाज़!

डॉ. निशा भारती, शोध सहायिका
जलवायु परिवर्तन अनुसंधान केंद्र,
भारतीय उष्णदेशीय मौसम
विज्ञान संस्थान, होमी भाभा रोड, पाषाण, पुणे

पापा के दिल से.....

माँ को गले लगाते हो, कुछ पल मेरे भी पास रहो !
पापा याद बहुत आते हो कुछ ऐसा भी मुझे कहो !
मैंने भी मन में जज्बातों के तूफ़ान समेटे हैं,
जाहिर नहीं किया न सोचो पापा के दिल में प्यार न हो !
थी मेरी ये ज़िम्मेदारी घर में कोई मायूस न हो,
मैं सारी तकलीफ़ें झेलूँ और तुम सब महफूज़ रहो,
सारी खुशियाँ तुम्हें दे सकूँ इस कोशिश में लगा रहा,
मेरे बचपन में थी जो कमियाँ वो तुमको महसूस न हों !
है समाज का नियम भी ऐसा पिता सदा गंभीर रहे,
मन में भाव छुपे हो लाखों, आँखों से न नीर बहे !
करे बात भी रूखी-सूखी, बोले बस बोल हिदायत के,
दिल में प्यार है माँ जैसा ही, किन्तु अलग तस्वीर रहे !
भूली नहीं मुझे हैं अब तक तुतलाती मीठी बोली,
पल-पल बढ़ते हर पल में जो यादों की मिश्री घोली,
कन्धों पे वो बैठ के जलता रावण देख के खुश होना,
होली और दीवाली पर तुम बच्चों की अल्हड़ टोली !
माँ से हाथ-खर्च मांगना, मुझको देख सहम जाना,
और जो डाटूं ज़रा कभी तो भाव नयन में थम जाना,
बढ़ते कदम लड़कपन को कुछ मेरे मन की आशंका,
पर विश्वास तुम्हारा देख मन का डर दूर वहम जाना !
कॉलेज के अंतिम उत्सव में मेरा शामिल न हो पाना,
ट्रेन हुई आँखों से ओझल, पर हाथ देर तक फहराना,
दूर गये तुम अब तो इन यादों से दिल बहलाता हूँ,
तारीखें ही देखता हूँ बस कब होगा अब घर आना !
अब के जब तुम घर आओगे, प्यार मेरा दिखलाऊंगा,
माँ की तरह ही ममतामयी हूँ तुमको ये बतलाऊंगा,
आकर फिर तुम चले गये बस बात वही दो-चार हुई,
पिता का पद कुछ ऐसा ही है फ़िर खुद को समझाऊंगा !

श्री निशीथ द्विवेदी,
महाप्रबंधक
गोला बारुद निर्माणी, खड़की, पुणे

साँची

हरे-भरे रास्ते नापते
नीला-पीला नभ निहारते
मंद -मंद हवा के झोंकों में झूलते
पहुँच गए हम अपनी मंजिल पर ।
स्थापत्य की बेमिसाल रचना ,
सम्राट अशोक की संकल्पना ,
तथागत के जीवन का स्मारक,
ऐतिहासिक स्मृतियों का धारक ।
आमंत्रण देते भव्य प्रवेश द्वार,
बुद्ध की सजीव प्रतिमा -
सौम्य मुख - मंत्र मुग्ध करता अपार ।
घुमावदार सीढ़ियाँ मानो ले जाती हैं
आध्यात्मिक शिखर के पार ।
अर्ध गोलाकार गुंबद सँजोए हैं
अनंत तपस्यामय बोध का सार ।
वैसे तो लाल प्रस्तर का मजबूत ढांचा ,
संभाले है बौद्धिक अवशेष
परंतु इसके दर्शन कर मिलते हैं
आत्मिक शांति और उन्मेष ।
महीन नक्काशी से अलंकृत है
विशाल स्तम्भ ,
चाहे हों पशु ,पुष्प या हों
शाला भँजिका - यक्षी
कलाकारों पर होता है दंभ ।
चरण- चित्र ,वेदिका ,तोरण
सब लगते हैं मनोहर ,
इतिहास के पृष्ठ पर उत्कीर्ण
साँची है विश्व धरोहर ।

सुश्री श्रद्धा चौहान
स्नातकोत्तर शिक्षिका इतिहास
पी एम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2
आयुध निर्माणी देहरोड, पुणे

बचपन के दिन

याद आते है बचपन के दिन,
प्यार भरी थपकियां और अपनी नादानी!

मेरी प्यारी- दुलारी बहिनियां
तेरी गंभीर सौम्यता के आगे
हार जाती थी मेरी चंचल अठखेलियाँ
निराला था अपना पल पल का साथ
वह घर घर का खेल और माँ की कहानी
याद आते है बचपन के दिन,
प्यार भरी थपकियां और अपनी नादानी!

मेरे दिल,बहुत याद आती है,
वह गर्मी की छुट्टी और प्यारा सा गांव,
बगिया की दुपहर और अमिया की छाँव!
वह डाली का झूला और चिड़ियों का गान,
बाँसो की झुरमुट और जुगनू की लाली!
दादी का दुलार और अपनी किलकारी,
अम्मा का प्यार और ताऊ जी का फरमान!
याद आते है बचपन के दिन,
प्यार भरी थपकियां और अपनी नादानी!

गाँव की यादों की धूमिल है कड़ियाँ,
याद आती है पुराने घर की सुंदर छवि,
और लंबी पगडंडियों!
प्यारी सखी क्या याद है तुम्हें,
अपना पीपल का पेड़ और आषाढ़ में
ताल का छलकता पानी!
माँ तुम्हारे बाल संवार रही थीं
जब तुमने थी ज़िद ठानी!
माँ ने तुम्हे झटका और कहा था,
देख तलैया में फेंक दूंगी,
बहुत गहरा है पानी!
याद आते है बचपन के दिन
प्यार भरी थपकियां और अपनी नादानी!!
हर साल गर्मी की छुट्टी और गांव को जाना,
शादी -गौना की रौनक,
और बुआ - दीदी का आना!
बड़ी अम्मा की पहेली और
छोटी अम्मा की रोमांचक बातें!
दिनभर की हमारी दौड़ और आँगन की रात,
लोकगीतों की सरगम और मेरी जिज्ञासा!
माँ मुरादे पूरी कर दे हलवा बांटूंगी
- मंदिर में आँख मूंदकर गाना!
याद बहुत आता है बुआ का प्यार,
और चाचीजी का दुलार!
काका संग घूमना और भैया का चिढ़ाना!
पिता की मन्द मुस्कान और माँ का हंसाना!

आह! मेरे मन!
अब नहीं है वह बचपन, न है वह ज़माना!

याद आते है बचपन के दिन
प्यार भरी थपकियां और अपनी नादानी!
बहुत याद आते है बचपन के दिन
प्यार भरी थपकियां और अपनी नादानी!

श्रीमती अलका पांडेय
स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी
केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 आयुध निर्माणी, देहु रोड,पुणे

।। शौर्य गाथा ।।

सहमी-सहमी थी कश्मीर की वादियाँ
सहमा सहमा आज सारा जहा था।
धर्म पूछकर निहत्थों का ख़ून
कायर आतंकियों ने बहाया था ।। 1।।

आज कश्मीर की वादियों में
पेड़ की डाली-डाली रोई थी।
झरनों की जल-धारा तो आज
बहनों की आँखों से बह रही थी। ।।2।।

फूलों से महकती वादियों में
नए सपनों को सँजोया था।
आज ख़ून की महक ने
अनगिनत सपनों को तोड़ दिया था। ।।3।।

तेरी हैवानियत देख पंछियों ने भी
आज चहकना छोड़ दिया था।
बादलों ने भी अपनी आँखों को
आज मूंद लिया था। ।। 4।।

नज़रों के सामने अपनों को
गोली से छलनी होते देखा था।
सीने से ख़ून की धारा नहीं
नारी के सिंदूर को बहाया था ।। 5।।

क़सम हमें उस सिंदूर की
तूने ज़ख़्म हर हिंदुस्तानी को दिया था।
क़सम हमें नारी के सम्मान की
उसका सिंदूर तूने मिटाया था ।।6।।

तैयार खड़ी थी जल, थल, वायुसेना
सीने पर अंगार बाँधकर।
आज इंतक़ाम हमें सिंदूर का लेना था
तेरे नापाक़ इरादों को जलाकार ।। 7।।

अरे दुश्मन तूने जो हथियार लाये थे।
दुनिया भर से भीख माँगकर।
उसे कबाड़ बना दिया हमारी सेना ने
आकाश तीर मिसाइल को दाग़कर ।। 8।।

बचकर भागे थे असली गुनहगार
घाटी के जंगलों में गोली मारकर।
सिर उनका भी कुचल दिया
सेना ने हर हर महादेव नाम लेकर ।। 9।।

मिटाकर आतंकियों को तेरे
इंतक़ाम सिंदूर का पूरा किया है।
जीत के आज ऐ जंग हमने
आगाज़ नए हिंदुस्तान का किया है ।।10।।

जीत के साथ आज आँखें भी नम है
निरपराध देशवासियों को खोने का ग़म है।
उनकी स्मृति हमेशा ज़िंदा रहेगी
आंतक से लड़ने की प्रेरणा बनेगी ।।11।।

हिंदुस्तानी सेना की यह शौर्य गाथा
मैं आज आपको सुनाता हूँ।
फिर एक बार हमारे बहादुर जवान
और नारी सम्मान के प्रति
नतमस्तक मैं होता हूँ ।। 12।।

जय हिंदी । जय जवान । जय किसान
जय विज्ञान । भारत माता की जय।

संजय बबन बोऱ्हाडे
वरिष्ठ परियोजना आरेखक
(भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लि.पाषाण, पुणे)

एक लड़की की पीएचडी तक की जिद और जीत की प्रेरणादायक कहानी

एक लड़की थी दीवानी सी,
पीएचडी करना था उसका ड्रीम,
पर उसके मम्मी-पापा बोले,
''बेटा, बन कोई गवर्नमेंट टीम ।''
थोड़ी ज़िद्दी, थोड़ी सपनीली,
बोली, ''करूंगी पीएचडी ही, चाहे अकेली ।''
मार्च, 2020 से शुरू हुआ सफ़र,
एमएससी लिया, केमिस्ट्री में डर ।
चाहती थी पढ़ना कुछ और,
पर मिली वही राह, जो लगे कठोर ।
एमएससी पूरी, फिर मिला एक ठिकाना-
प्रोजेक्ट असिस्टेंट का ऑफर था सुहाना।
पर किस्मत ने फिर चाल चली,
गाइड मिला, पर गाइडन्स गलत थी भली।
झूठे सपनों में उलझती गई,
हर तरफ़ से ठोकरें मिलती रहीं।
आईआईटी तक पहुंची हिम्मत लेके,
इंटरव्यू दिया, पर सिलेक्शन न हो सके।
सपनों में दरारें पड़ने लगीं,
उम्मीदें अब सिसकने लगीं।
ग़म इतना कि सोच लिया -
''अब तो शायद ये दुनिया ही छोड़ दूं।''
ना घर में बता सकी,
ना किसी को कह सकी,
हर दिशा से अंधेरा ही दिखा,
हर उम्मीद बह चली।

फिर हुआ एक चमत्कार,
जैसे रौशनी आई अंधकार के परा।
मिला एक सच्चा गाइड,
जिसने दिया साथ, बना उसे ब्राइट ।
शिफ्ट हुई पुणे की ओर,
जैसे खुला कोई नया भोर।
फिर से जोड़ी हिम्मत की डोरी,
पीएचडी की फिर लगी तैयारी।
स्ट्रगलस अभी भी थे साथ,
पर अब न थी वो अकेली रात।
सही दिशा, सही सलाह मिली,
जिंदगी फिर से हँस पड़ी।
अब पीएचडी पूरी हो चुकी है,
सपनों की कहानी सच्ची हो चुकी है।
पेरेंट्स की आँखों में गर्व है,
और उसके होंठों पर सिर्फ़ हर्ष है।
कभी जो लड़की टूटी थी बिखर के,
आज बनी मिसाल सब लड़कियों के घर में।
सीखा उसने, चाहे जितना हो अंधेरा,
अगर जिद सच्ची हो तो जीत है केवल मेरा।

कुमारी दुर्गा
परियोजना सहायोगी 1, केआरसी पुस्तकालय,
सीएसआईआर-एनसीएल, पुणे

बारिश की बूंद

हवाओं ने बादलों का पैगाम लाया है।
बारिश की बूंदें बनकर
धरती से मिलने का ख्याल आया है।

हर जीव घर छाई
खुशी की लहेर ।
झुमे धरती, गाए कोयल
नाचे मस्त मयूर ।

गजब है, ये बारिश की बूंदें
सूखी आँखों में समाएं यादें बचपन की ।
वो बारिश की मस्ती और
कश्ती कागज की ।

बादल बूंदों से धरती में ऐसा समाया
मानो हरा चोला पहनाया ।
बुझ गई प्यास सूखे लबों की ।
बुझ गई प्यास सूखे लबों की.....

महात्मा

सत्य अहिंसा का पुजारी ।
बिन शस्त्र का क्रांतिकारी ।
जिसके विचारो पर दुनिया है वारी ।
शान से लहराता तिरंगा है जिसका आभारी ।।

कठिन पथ पर चलकर जिसने मिला दी आजादी ।
भूखे-नंगे सबके मानवतावादी ।
समय और स्वच्छता के सदा पाबंदी ।
जिसने बनाया स्वालंबन का प्रतीक खादी ।

गांधी के सपनो का भारत बनेगा ।
जब हर भ्रष्टाचारी का मन गांधीमय होगा ।
दूजा हुआ, ना होगा ।
महात्मा एक ही हैं और एक ही रहेगा ।।
महात्मा एक ही हैं और एक ही रहेगा ।

निशा सोनेकर, सहायक
केंद्रीय मधुमक्खी अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण संस्थान, पुणे

बदलता मौसम

कहीं धूप कहीं छाया,
जहाँ अपना भी पराया।
पेड़ पौधे ने भी बताया,
वृक्ष की डाली ही बारिश का सहारा।।

कड़ी धूप में सूरज की किरणों ने,
गर्मी का अंदाज बताया।
सूखे पेड़, पौधे और पत्तों ने ही,
ठंड का एहसास मिटाया।।

चलते- चलते, चलते-चलते,
रास्ता भी खत्म हो जाता है।
बारिश की राह देखते-देखते,
किसान भी मायूस होने लगता है।।

कहते हैं जमाना बदल रहा है,
बदलने से ही बदलाव आता है।
हमारी सोच कब बदलेगी,
मौसम ने भी अपना रुख बदला है।।
आज प्रदूषण की मार जैसे,
एक एक राज्य निगल रहा है।
आज से ही एक निश्चय करना है,
प्रदूषण को रोकना है, जीवन, बचाना है।।

आओ मिलकर पेड़ लगाएं
धरती पर हरियाली लाएं।
मिलकर ऐसा लक्ष्य बनाएं,
जो जीवन को खुशहाल बनाए।।

चींटी काटते ही ऐसा दर्द होता है,
जैसे अपनों का एहसास होता है।
नहीं सुनी मानव ने पेड़, पौधे की आवाज,
अब ऑक्सीजन-ऑक्सीजन पुकारना पड़ता है।।

मयूर रामशंकर बानाईत
भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान, पुणे

मेरे मन की गुल्लक

व्यय किया है एक अरसा ज़िंदगी की दौड़ में,
जहाँ लगे हैं सब एक अंजानी-सी होड़ में,
खुशी के कुछ पल जो लगते क्षुल्लक थे,
रखती गई वह सब मैं अपने गुल्लक में।

चलते रहे हम संस्कार लिए साथ इस दौर में,
देखा है हमने लोगों को अहंकार के मोड़ पे,
विनम्रता के कुछ पल जो लगते क्षुल्लक थे,
रखती गई वह सब मैं अपने गुल्लक में।

स्वीकारा है सभी ने खुद को जीत की प्रीत में,
भूल गए हैं वो कि हार भी शामिल है इस रीत में,
कोशिश के कुछ पल जो लगते क्षुल्लक थे,
रखती गई वह सब मैं अपने गुल्लक में।

रोटी, कपड़ा और मकान की खोज में,
दबे हुए हैं आज सब जिम्मेदारियों के बोझ में,
आराम के कुछ पल जो लगते क्षुल्लक थे,
रखती गई वह सब मैं अपने गुल्लक में।
सपने तो हजार सभी सजाते हैं अपनी आँखों में,
कोई बताए उन्हें, न जी सकते हम बस ख्यालों में,
वास्तविकता के कुछ पल जो लगते क्षुल्लक थे,
रखती गई वह सब मैं अपने गुल्लक में।

खोये हैं सब यहाँ नोटों की चमक में,
ना जानते वो कि गुल्लक की शान है क्षुल्लक सिक्कों की खनक में,
अल्फ़ाज़ों ने जो कहा-ये तो सब क्षुल्लक है,
रखती गई वह सब बेशकीमती पल मैं अपने मन के गुल्लक में।

अनुभा पुलवाले
सहायक तकनीकी अधिकारी
भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान पुणे

रे साकी

कुछ मेरे हिस्से की साकी
हो अगर हिदायत ला देना
हूं बीच भंवर मैं, तू बाकी
ना होश उड़े समझा देना

ये रात नहीं, दो रात नहीं
एक अरसे का है बोझ लिए
दिल नाहक इतना दीवाना
क्यों रहता है बतला देना

क्यों कर डूबा इस दरिया में
फितरत जो ऐसी थी ही नहीं
कुछ रहूं ज़रा सा मैं मुझसा
मद साकी बस उतना देना

नजरों से नजरें कब रूठी
ना होश रहा, ना याद रही
ना फ़िर जाऊं उस राह कभी
ताक़ीद खरे दोहरा देना

कब यार हुआ वो बेपरवाह
और प्यार हुआ बेगाना सा
गर सोच, इसे मैं खो जाऊं
तुम बेशक राह दिखा देना ।

क्या ख़ूब तिज़ारत चाहत की
वो करता, मैं ना वाक़िफ था
ना आप हिकारत कर बैठूं
सुन साकी तू सिखला देना

हर रोज़ मेरी मंजिल साकी
ये मयखाना ये पैमाना
हूं आप चला आता, मुझको
तू मेरे घर पहुंचा देना

नीरज सोनकर
कार्यकारी सहायक,
सीमा शुल्क आयुक्तालय, पुणे

मुक्ति या बंधन

हम बंधनों से मुक्त होना चाहते हैं
हम आसमां में घर बनाना चाहते हैं
रूसो ने कहा हम पैदाइशी मुक्त हैं
फिर भी हम सभी क्यों बंधनयुक्त हैं

मुक्त होंवे जाति से मुक्त होंवे धर्म से
पर कभी न मुक्त होंवे अपने कर्म से
मुक्त होंवे भोग से मुक्त होंवे रोग से
पर कभी न मुक्त होंवे अपने योग से

मुक्त हों आलस्य से मुक्त होंवे अज्ञान से
हों कभी न मुक्त हम आज के विज्ञान से
मुक्त होंवे दुश्मनों से, मुक्त हो संधान से
पर कभी न मुक्त हों प्रेम के अनुसंधान से

विपदाओं को देख मुक्त होना चाहते हैं
क्यों कायरों की भांति भागना चाहते हैं
जब वंशज हो वीरों के
फिर क्यों कायर भाँति बनना चाहते हैं

हम त्याग दें अपने अहम को आज ही
फोड़ दें घड़ा घमंड अपने का आज ही
मुक्त होंवे अपने दुर्विकारों से आज ही
आवारा चाहते सैराट बनना आज ही

फिरोज अहमद
पीजीटी हिन्दी
पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय, पुणे

सीएसआईआर-एनसीएल, पुणे में एक दिवसीय हिन्दी राजभाषा संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन (दिनांक-22 जनवरी,2025)

गृहमंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्य-2), पुणे के तत्वावधान में सीएसआईआर-एनसीएल में दिनांक 22 जनवरी, 2025 को एक दिवसीय हिन्दी राजभाषा संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को दो सत्रों में आयोजित किया गया । प्रातः काल में उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया । इस सत्र में अध्यक्ष के रूप में **डॉ. नरेंद्र कडू** (मुख्य वैज्ञानिक, एनसीएल, पुणे) तथा मुख्य अतिथि के रूप में **श्री संजय भारद्वाज** (प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार, संपादक एवं संस्कृतिकर्मी, पुणे), **श्रीमती पूजा कुलकर्णी** (प्रशा. नियंत्रक, एनसीएल,पुणे) एवं **डॉ. (श्रीमती) स्वाति चढ्ढा** (हिन्दी अधिकारी, एनसीएल, पुणे एवं सचिव-नराकास (कार्य-2), पुणे मंच पर उपस्थित थे ।

उद्घाटन सत्र के प्रारंभ में **डॉ. स्वाति चढ्ढा** ने सभा में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया और कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रदान की । तत्पश्चात **श्रीमती समीरा कुलकर्णी** (प्रशा. अधिकारी), **श्रीमती संध्या श्रीवास्तव** (निजी सचिव, वित्त एवं लेखा विभाग) एवं **श्रीमती शायनी जॉन** (निजी सचिव, प्रशा. नियंत्रक कार्यालय) द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई ।

तत्पश्चात् **डॉ. नरेंद्र कडू** (मुख्य वैज्ञानिक, एनसीएल, पुणे) द्वारा मुख्य अतिथि के रूप में **श्री संजय भारद्वाज** (प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार, संपादक एवं संस्कृतिकर्मी, पुणे) का पौधा देकर स्वागत किया गया ।

इसके उपरांत मुख्य अतिथि **श्री संजय भारद्वाज** ने अपने संबोधन में कहा कि - भाषा मूल रूप से सभ्यता और संस्कृति से जुड़ी होती है और हमारी हिन्दी भाषा में यह खूबी है कि सभी क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृतियों को अपने में समाहित कर लेती है ।

डॉ. नरेंद्र कडू (मुख्य वैज्ञानिक, एनसीएल, पुणे) ने बैठक में उपस्थित सभी संस्थानों के प्रमुख तथा अन्य अधिकारियों/ कर्मचारियों का स्वागत करते हुए कहा हम सभी को राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा एवं प्रोत्साहन देना चाहिए, जिससे कि राजभाषा के कार्यान्वयन में गति आए । उन्होंने कहा कि राजभाषा के माध्यम से हम सब आपस में जुड़ कर राष्ट्र का विकास कर सकते है । उन्होंने उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुखों/सदस्यों को अपना अमूल्य सहयोग देने एवं कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए धन्यवाद दिया ।

इसके पश्चात् टीम क्षितिज द्वारा ''**बहता समीर - गाता कबीर**'' (कबीर दर्शन पर आधारित विशेष संगीतमय कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया । सभी दर्शकों ने कार्यक्रम तथा इसके सूत्र संचालन की अत्यंत सराहना की । कार्यक्रम के अंत में सभी कलाकारों को **श्रीमती पूजा कुलकर्णी** और **श्री कौशल कुमार** द्वारा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

द्वितीय सत्र में पुरस्कार वितरण समारोह का आरंभ किया गया । इसमें **डॉ. आशीष लेले,** (निदेशक, सीएसआईआर-एनसीएल एवं अध्यक्ष, नराकास (का.-2), पुणे), मुख्य अतिथि के रूप में **श्री संजय भारद्वाज** (प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार, संपादक एवं संस्कृतिकर्मी, पुणे) एवं **डॉ. (श्रीमती) स्वाति चढ्ढा** (हिन्दी अधिकारी, एनसीएल, पुणे एवं सचिव-नराकास (कार्य-2), पुणे) मंच पर उपस्थित थे । इस कार्यक्रम में एनसीएल से **श्रीमती पूजा कुलकर्णी** (प्रशा. नियंत्रक), **श्री कौशल कुमार** (प्रशा. अधिकारी), **श्रीमती समीरा कुलकर्णी** (प्रशा. अधिकारी) तथा वरिष्ठ वैज्ञानिकगण, प्रशासकीय अधिकारी/ कर्मचारी/ शोधछात्र इत्यादि भी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

इस सत्र के आरंभ में नराकास सचिव **डॉ. स्वाति चढ्ढा** ने नराकास की विभिन्न गतिविधियों, पुरस्कार योजनाओं एवं मूल्यांकन प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी । इसके उपरांत श्री प्रभाकर पांडेय (राजभाषा अधिकारी (सी-डैक) ,पुणे एवं नराकास मूल्यांकन समिति के सदस्य ने मूल्यांकन समिति द्वारा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिन्दी पत्रिका हेतु प्राप्त सभी एंट्रीयों का मूल्यांकन एवं सदस्य कार्यालयों का निरीक्षण किन महत्वपूर्ण बिंदुओं के आधारों पर किया, इस संबंध में सभी को जानकारी प्रदान की ।

इसके उपरांत **डॉ. आशीष लेले,** (निदेशक, सीएसआईआर-एनसीएल एवं अध्यक्ष, नराकास (का.-2), पुणे) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि 'राजभाषा के कारण हम सब लोग एक मंच पर एकत्र हो पाए है । केंद्र सरकार की यह अत्यंत प्रतिष्ठित समिति है जिसने राजभाषा के माध्यम से हम सभी केंद्रीय संस्थानों

को आपस में जोड़ दिया है। मैं आप सबसे निवेदन करना चाहता हूं कि इस समिति के माध्यम से हम सभी आपस में मिल कर राजभाषा का विकास तो करें ही, साथ ही अपने राष्ट्र के विकास और प्रगति में भी अपना योगदान दें।

इस दौरान अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों को वर्ष 2023-24 हेतु उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन तथा हिन्दी गृहपत्रिका के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए । इसके साथ ही विभिन्न अंतरकार्यालयीन प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का वितरण भी किया गया । इस सत्र का संचालन **श्री नितिन केशरवानी** (हिन्दी प्रभारी, आइसर) द्वारा किया गया ।

तत्पश्चात निदेशक, **डॉ. आशीष लेले** द्वारा मुख्य अतिथि **श्री संजय भारद्वाज** को शॉल एवं स्मृति चिह्न दिया गया तथा नराकास मूल्यांकन समिति के सदस्य **श्री प्रभाकर पांडेय** को भी स्मृति चिह्न प्रदान किया गया ।

इसके उपरांत **श्री कौशल कुमार** (प्रशा. अधिकारी,एनसीएल, पुणे) ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया । उन्होंने सभी को प्रेरित करते हुए कहा कि भविष्य में यह समिति देश की सर्वश्रेष्ठ समिति के रूप में जानी जाएगी । इस कार्यक्रम में 60 केंद्रीय कार्यालयों के 130 प्रतिनिधियों ने अपनी सहभागिता की, जिसमें से 18 केंद्रीय संस्थानों के संस्थान प्रमुख भी उपस्थित थे । उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुखों एवं प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम के आयोजन की सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए इसे एकदम अनूठा तथा रोचक बताया ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-2), पुणे की छ:माही बैठक की रिपोर्ट (दिनांक 30 जून, 2025)

बैठक दिनांक एवं स्थान :- बैठक दिनांक 30 जून 2025 (सोमवार) दोपहर 3:30 बजे सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे के लेक्चर हॉल में **डॉ. आशीष लेले** (निदेशक, सीएसआईआर-एनसीएल एवं अध्यक्ष, न.रा.का.स. (का.-2), पुणे) की अध्यक्षता में आयोजित की गई । इस बैठक में **प्रो. सुनील भागवत** (निदेशक, आइसर,पुणे) एवं **श्री सचिंद्र पेडणेकर** (निदेशक, ईटीडीसी, पुणे) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे । इस बैठक में 22 केंद्रीय संस्थानों के संस्थान प्रमुख उपस्थित थे । इस बैठक में लगभग 58 केंद्रीय कार्यालयों के 100 प्रतिनिधियों ने अपनी सहभागिता की ।

प्रारंभ में **डॉ. (श्रीमती) स्वाति चढ्ढा** (वरि. हिंदी अधिकारी, सीएसआईआर-एनसीएल, पुणे तथा सचिव, न.रा.का.स. (का.-2), पुणे) ने सभा में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया तथा नराकास समिति के उद्देश्य के बारे में जानकारी प्रदान की। । तत्पश्चात् **श्री नीरज सोनकर,** कार्यकारी सहायक, सीमा शुल्क के आयुक्त का कार्यालय, पुणे द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई । इसके उपरांत सभी सदस्य-कार्यालयों से पधारे कार्यालय प्रमुखों ने अपना संक्षिप्त परिचय दिया।

तत्पश्चात् **डॉ. आशीष लेले** (निदेशक, एनसीएल एवं अध्यक्ष, न.रा.का.स. (का.-2), पुणे) द्वारा विशिष्ट अतिथि **प्रो. सुनील भागवत** एवं **श्री सचिंद्र पेडणेकर** का पौधा देकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात् निम्नांकित बिंदुओं पर चर्चा की गई :-

(1) **पिछली बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि :-** सचिव, न.रा.का.स. द्वारा सूचित किया गया कि पिछली बैठक की प्रतियां सभी सदस्यों को उपलब्ध करा दी गई थी तथा इसमें निर्णय लिए गए सभी मुद्दों पर कार्रवाई की गई है । उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा इस बिंदु पर सहमति प्रदान की गई।

(2) **छमाही रिपोर्टों की समीक्षा :-** सचिव, न.रा.का.स. द्वारा सभी सदस्य-कार्यालयों द्वारा प्राप्त गत छः महीनों (अक्टूबर, 2024 से मार्च, 2025) की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी रिपोर्टों की समीक्षा की गई । उक्त समीक्षा में पायी गई कमियों पर सदस्य-कार्यालयों से जुड़े पदाधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा की गई तथा संबंधित सुझाव दिए गए एवं राजभाषा प्रयोग के संबंध में विभिन्न बिंदुओं पर मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

यह भी सूचित किया गया कि केवल 51 कार्यालयों से ही पिछली छ:माही की रिपोर्ट प्राप्त हुई है, जिनकी समीक्षा की गयी तथा जिन कार्यालयों से तिमाही रिपोर्ट प्राप्त हुई हैं या छ:माही रिपोर्ट देर से प्राप्त हुई है, उनकी समीक्षा नहीं की जा रही है । इसके साथ ही सभी को समय से रिपोर्ट भेजने का निवेदन किया तथा सभी कार्यालय प्रमुखों को इस बैठक में अवश्य उपस्थित रहने का निवेदन

किया । अध्यक्ष महोदय ने नराकास सचिव से निवेदन किया कि इस संबंध में एक पत्र जारी करके सभी कार्यालयों को सूचित किया जा सकता है ।

(३) **पत्रिकाओं का विमोचन :-** इस बैठक में सीएसआईआर-एनसीएल की छ:माही राजभाषा पत्रिका 'एनसीएल-आलोक' का विमोचन किया गया ।

(4) **नराकास सचिव द्वारा पिछली छ: माही के दौरान संपादित गतिविधियों का ब्यौरा :-** सचिव, न.रा.का.स. द्वारा पिछली छ:माही के दौरान आयोजित की गई विभिन्न गतिविधियों की निम्नांकित संक्षिप्त जानकारी प्रदान की गई ।

1. दिनांक 22 जनवरी, 2025 को सीएसआईआर- एनसीएल, पुणे में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-2), पुणे के सदस्य कार्यालयों हेतु 'एक दिवसीय हिन्दी राजभाषा संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण समारोह' का आयोजन किया गया ।

2. दिनांक 29 अप्रैल, 2025 को कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, पुणे द्वारा आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी में नराकास-2 के सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रतिभागिता की गई ।

3. दिनांक 23.05.2025 को भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम), पुणे द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्या.-2), पुणे के तत्वावधान में नराकास, पुणे (कार्या.-2) के सदस्य कार्यालयों हेतु 'हिन्दी एकांकी मंचन प्रतियोगिता' का सफल आयोजन किया गया ।

4. दिनांक 31 मई, 2025 को गोला बारूद निर्माणी, खड़की, पुणे द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्या.-2), पुणे के तत्वावधान में नराकास, पुणे (कार्या.-2) के सदस्य कार्यालयों हेतु 'अखिल भारतीय हिन्दी कवि सम्मेलन' का सफल आयोजन किया गया ।

5. सचिव द्वारा सूचित किया गया कि नराकास-2 की पत्रिका हेतु संपादक मंडल की प्रथम बैठक आयोजित की जा चुकी है एवं पत्रिका के नाम हेतु सभी सदस्य कार्यालयों से वोटिंग कराई गई थी, जिसमें सर्वाधिक वोट संगम नाम को मिले है । अत: इस पत्रिका का नाम सर्वसम्मति से संगम चुना जाता है । उपस्थित सभी सदस्यों ने इस सूचना पर हर्ष व्यक्त किया ।

(5). **अंशदान देने वाले सदस्य कार्यालयों को धन्यवाद ज्ञापन एवं सूचना :-** सदस्य सचिव, नराकास (का.-2), पुणे) द्वारा अंशदान देने वाले सदस्य कार्यालयों का धन्यवाद किया गया तथा जिन सदस्यों ने अंशदान नहीं दिया है, उनसे भी इस संबंध में शीघ्र कार्रवाई का निवेदन किया गया । यह भी सूचित किया गया कि सभी सदस्य कार्यालयों को अंशदान देना अनिवार्य है । इसके साथ ही उन्होंने सभी कार्यालयों से अंशदान देने के पश्चात् अंशदान संबंधी सूचना प्रदान करने का निवेदन किया ।

(6) **आगामी कार्यक्रमों के संबंध में चर्चा -**

1. **अंतरकार्यालयीन प्रतियोगिताओं का आयोजन :-** सदस्य-सचिव ने प्रस्ताव दिया कि नराकास के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों द्वारा विभिन्न अंतरकार्यालयीन हिन्दी कार्यक्रम किए जाए, ताकि कार्मिकों को नगर स्तर पर रचनात्मक अभिव्यक्ति का मौका मिलने के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो तथा सदस्य कार्यालयों के बीच मेल-जोल भी बढ़ सकें। कार्यक्रमों का पूरा आयोजन सदस्य कार्यालयों द्वारा किया जाएगा और पुरस्कार नराकास द्वारा प्रदान किए जाएंगे। यह प्रस्ताव रखा गया कि यह कार्यक्रम 15 जुलाई, 2025 से 31 जुलाई, 2025 के बीच आयोजित किए जा सकते है, हालांकि अंतिम तिथियां आयोजक कार्यालय की सुविधानुसार ही तय की जाएगी । निम्नांकित कार्यक्रमों हेतु प्रस्ताव रखे गए, जिस पर अध्यक्ष महोदय तथा विभिन्न कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने सहमति जताई ।

क्रमांक	प्रतियोगिता का नाम	प्रस्तावित आयोजक संस्थान
1.	तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता	राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे
2.	हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता	राष्ट्रीय कोशिका विज्ञान केंद्र (एनसीसीएस), पुणे
3.	शब्द ज्ञान प्रतियोगिता	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पुणे
4.	काव्यपाठ प्रतियोगिता	प्रमुख जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं का कार्यालय, भारत मौसम विज्ञान विभाग, (आईएमडी), पुणे
5.	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता	भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आइसर), पुणे
6.	वाद-विवाद प्रतियोगिता	सीमा शुल्क के आयुक्त का कार्यालय, पुणे
7.	एकल गीत गायन प्रतियोगिता	भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई), पुणे

सर्व सम्मति से यह तय किया गया कि उपरोक्त सभी संस्थान अपने-अपने संस्थानों में लिखित प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे और अनुमोदन के पश्चात् आगे कार्रवाई की जाएगी, आपसी सुविधानुसार प्रतियोगिता की तिथि तथा प्रतियोगिता के प्रकार में भी परिवर्तन किया जा सकता है। सचिव नराकास ने कहा कि शीघ्र ही इस संबंध में लिखित सूचना भी सभी सदस्य कार्यालयों को भेजी जाएगी ।

2. **संगोष्ठी का आयोजन :-** सचिव द्वारा सूचित किया गया कि आगामी 1 सितंबर, 2025 को भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (जेडएसआई), पुणे द्वारा नराकास के तत्वावधान में एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की जाएगी ।

(7). **सरकारी कार्यक्रमों में कर्मचारियों को नामित करने के संबंध में :-** सचिव द्वारा सूचित किया गया कि राजभाषा विभाग से प्राप्त निर्देश अनुसार सरकारी कार्यक्रमों में केवल स्थाई कर्मचारियों को ही नामित किया जाना है, उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों से इसका ध्यान रखने का अनुरोध किया ।

(8). **विशिष्ट अतिथियों का संबोधन :- प्रो. सुनील भागवत** (निदेशक, आइसर, पुणे) एवं **श्री सचिंद्र पेडणेकर** (निदेशक, ईटीडीसी, पुणे) ने अपने - अपने संस्थानों में किए जा रहे राजभाषा संबंधी कार्यों की जानकारी प्रदान की ।

इसके उपरांत **डॉ. आशीष लेले** (निदेशक, एनसीएल एवं अध्यक्ष, न.रा.का.स. (का.-2), पुणे) द्वारा **प्रो. सुनील भागवत** (निदेशक, आइसर, पुणे) एवं **श्री सचिंद्र पेडणेकर** (निदेशक, ईटीडीसी, पुणे) को स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

(9) **अध्यक्ष का संबोधन :- डॉ. आशीष लेले** (निदेशक, एनसीएल एवं अध्यक्ष, न.रा.का.स.) ने बैठक में उपस्थित सभी संस्थानों के प्रमुख तथा अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत करते हुए कहा कि आज हिन्दी में विज्ञान तथा तकनीकी के सभी विषयों तथा शब्दकोशों की बड़ी निधि तैयार हो चुकी है। आज हिन्दी विश्व भाषा बन चुकी है और सबसे बड़े बाजार का आधार बन चुकी है। जरूरत है कि आज अपने देश में हिन्दी भाषा को हम रोजगार से जोड़े। भाषा को लेकर किसी प्रकार का विवाद नहीं होना चाहिए, हमारी सभी क्षेत्रीय भाषाएं सम्माननीय है, किंतु यह याद रखना चाहिए कि हम भारतीयों की पहचान हिन्दी भाषा से ही है। मुझे संतोष है कि गृहमंत्रालय राजभाषा विभाग ने हमें जो जिम्मेदारी सौंपी है, उसे हम आप सभी के सहयोग से संतोषजनक रूप से निभा पा रहे हैं।

(10). **धन्यवाद ज्ञापन :-** कार्यक्रम के अंत में श्री कौशल कुमार, प्रशासनिक अधिकारी, एनसीएल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया । उन्होंने कहा कि हम सब मिल कर राजभाषा के इस मंच को और भी अधिक सशक्त करें और इसके साथ-साथ अपने देश के विकास में भी हमारा योगदान बढ़ा सकें । उन्होंने सुझाव दिया कि सभी सदस्य कार्यालय नराकास के इस मंच पर जन-कल्याण से जुड़े विशिष्ट कार्यों की प्रस्तुति भी कर सकते हैं तथा अपने-अपने संस्थानों में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्राप्त सर्वश्रेष्ठ रचनाओं को नराकास पत्रिका के लिए भी भेज सकते है । इसी के साथ बैठक समाप्त हुई ।

एनसीएल में हिन्दी राजभाषा संगोष्ठी का हुआ आयोजन

पुणे (सं). केंद्रीय गृहमंत्रालय द्वारा गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (2), पुणे द्वारा एनसीएल में 22 जनवरी को एक दिवसीय हिन्दी राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इसके उद्घाटन सत्र में अध्यक्ष के रूप में डॉ. नरेंद्र कडू (मुख्य वैज्ञानिक, एनसीएल, पुणे) तथा मुख्य अतिथि के रूप में संजय भारद्वाज (हिन्दी साहित्यकार), पूजा कुलकर्णी (प्रशा. नियंत्रक, एनसीएल) एवं डॉ. स्वाति चड्ढा (हिन्दी अधिकारी, एनसीएल व सचिव-नराकास उपस्थित थीं. डॉ. स्वाति चड्ढा ने सभी का स्वागत किया और कार्यक्रम की प्रस्तावना पेश की. समीरा कुलकर्णी, संध्या श्रीवास्तव एवं शायनी जॉन ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की. संजय भारद्वाज ने कहा भाषा मूल रूप से सभ्यता और संस्कृति से जुड़ी होती है और हमारी हिन्दी भाषा में यह खूबी है कि सभी क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृतियों को अपने में समाहित कर लेती है. इसके बाद टीम क्षितिज द्वारा बहता समीर– गाता कबीर कबीर दर्शन पर आधारित विशेष संगीतमय कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया.द्वितीय सत्र में डॉ. आशीष लेले ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा राजभाषा के कारण हम सब लोग एक मंच पर एकत्र हो पाए हैं. राजभाषा के माध्यम से हम केंद्रीय संस्थानों को आपस में जोड़ दिया है.

सीएसआईआर-एनसीएल की छह माही समीक्षा बैठक

भास्कर न्यूज़|पुणे.

केंद्र सरकार की न.रा.का.स. प्रतिष्ठित समिति है, जिसने हम सबको जोड़ा है। इसके साथ ही हम सभी को राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा एवं प्रोत्साहन देना चाहिए। जिससे कि राजभाषा के कार्यान्वयन में गति आए। सीएसआईआर-एनसीएल में नराकास की चौथी छःमाही समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए डॉ. आशीष लेले (निदेशक, सीएसआईआर-एनसीएल एवं अध्यक्ष, नराकास) ने यह बात कही। डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य (उप निदेशक, राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय) द्वारा छः माही रिपोर्ट की समीक्षा प्रस्तुत की गई। उन्होंने कहा कि न.रा.का.स. के माध्यम से जुड़कर सभी संस्थान राजभाषा प्रगति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकते है। डॉ. हेमा यादव (निदेशक, वैकुंठ मेहता राष्ट्रीय सहकारी प्रबंध संस्थान, पुणे) एवं अविनाश तरहावदकर (महाप्रबंधक, म्युनिशंस इंडिया लिमिटेड, पुणे) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस बैठक में 13 केंद्रीय संस्थानो के संस्थान प्रमुख उपस्थित थे। लगभग 51 केंद्रीय कार्यालयों के 93 प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। डॉ. स्वाति चड्ढा (हिंदी अधिकारी, सीएसआईआर-एनसीएल, पुणे एवं सदस्य–सचिव, नराकास (का-2), पुणे) ने स्वागत किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-2), पुणे की छ:माही बैठक की रिपोर्ट (दिनांक 27 नवंबर, 2025)

बैठक दिनांक एवं स्थान :- बैठक दिनांक 27 नवंबर, 2025 (गुरूवार) दोपहर 2:15 बजे सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे के लेक्चर हॉल में **डॉ. आशीष लेले** (निदेशक, सीएसआईआर-एनसीएल एवं अध्यक्ष, न.रा.का.स. (का.-2), पुणे) की अध्यक्षता में आयोजित की गई । इस बैठक में **श्री अरूण रा. ठाकुर** (मुख्य महाप्रबंधक, गोला बारूद निर्माणी, खड़की, पुणे) एवं डॉ. के. वी. प्रसाद (निदेशक, भा. कृ. अनु. प.- पुष्प विज्ञान अनुसंधान निदेशालय, पुणे) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे । इस बैठक में 22 केंद्रीय संस्थानों के संस्थान प्रमुख उपस्थित थे । इस बैठक में लगभग 50 केंद्रीय कार्यालयों के 94 प्रतिनिधियों ने अपनी सहभागिता की ।

प्रारंभ में डॉ. (श्रीमती) स्वाति चड्ढा (वरि. हिंदी अधिकारी, सीएसआईआर-एनसीएल, पुणे तथा सचिव, न.रा.का.स. (का.-2), पुणे) ने सभा में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया तथा नराकास समिति के उद्देश्य के बारे में जानकारी प्रदान की ।

तत्पश्चात् **डॉ. आशीष लेले** (निदेशक, एनसीएल एवं अध्यक्ष, न.रा.का.स. (का.-2), पुणे) द्वारा उपस्थित **श्री अरूण रा. ठाकुर** एवं **डॉ. के. वी. प्रसाद** का पौधा देकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात् निम्नांकित बिंदुओं पर चर्चा की गई :-

(1). पिछली बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि :- सचिव, न.रा.का.स. द्वारा सूचित किया गया कि पिछली बैठक की प्रतियां सभी सदस्यों को उपलब्ध करा दी गई थी तथा इसमें निर्णय लिए गए सभी मुद्दों पर कार्रवाई की गई है । उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा इस बिंदु पर सहमति प्रदान की गई।

(2). छमाही रिपोर्टों की समीक्षा :- सचिव, न.रा.का.स. द्वारा सभी सदस्य-कार्यालयों द्वारा प्राप्त गत छः महीनों (अप्रैल, 2025 से सितंबर, 2025) की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी रिपोर्टों की समीक्षा की गई । उक्त समीक्षा में पायी गई कमियों पर सदस्य-कार्यालयों से जुड़े पदाधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा की गई तथा संबंधित सुझाव दिए गए एवं राजभाषा प्रयोग के संबंध में विभिन्न बिंदुओं पर मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

यह भी सूचित किया गया कि केवल 50 कार्यालयों से ही पिछली छ:माही की रिपोर्ट प्राप्त हुई है, जिनकी समीक्षा की गयी तथा जिन कार्यालयों से तिमाही रिपोर्ट प्राप्त हुई हैं या छ:माही रिपोर्ट देर से प्राप्त हुई है, उनकी समीक्षा नहीं की जा रही है । इसके साथ ही सभी को समय से रिपोर्ट भेजने का निवेदन किया तथा सभी कार्यालय प्रमुखों को इस बैठक में अवश्य उपस्थित रहने का निवेदन किया । अध्यक्ष महोदय ने नराकास सचिव से निवेदन किया कि इस संबंध में एक पत्र जारी करके सभी कार्यालयों को सूचित किया जा सकता है ।

(3). **नराकास सचिव द्वारा पिछली छः माही के दौरान संपादित गतिविधियों का ब्यौरा :-** सचिव, न.रा.का.स. द्वारा पिछली छ:माही के दौरान आयोजित की गई विभिन्न गतिविधियों की निम्नांकित संक्षिप्त जानकारी प्रदान की गई ।

1). नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्या-2), पुणे के तत्वावधान में 18 जुलाई, 2025 से 13 अगस्त, 2025 के दौरान विभिन्न सदस्य कार्यालयों की ओर से निम्नलिखित अंतर कार्यालयीन हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । प्रतियोगिताओं का विवरण इस प्रकार है:-

1. दिनांक 18/07/2025 को शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन क्षेत्रीय आयुर्वेदीय अनुसंधान संस्थान, पुणे में किया गया ।

२. दिनांक 21/07/2025 को हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन राष्ट्रीय कोशिका विज्ञान केंद्र (एनसीसीएस), पुणे में किया गया ।

3. दिनांक 23/07/2025 को सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आइसर), पुणे में किया गया ।

4. दिनांक 25/07/2025 को तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन सी एसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे में किया गया ।

5. दिनांक 29/07/2025 को स्वरचित हिन्दी काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं का कार्यालय, भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी), पुणे में किया गया ।

6. दिनांक 30/07/2025 को वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन सीमा शुल्क के आयुक्त का कार्यालय, पुणे में किया गया ।

7. दिनांक 13/08/2025 को एकल गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई), पुणे में किया गया ।

सदस्य सचिव द्वारा सभी आयोजक कार्यालयों को धन्यवाद एवं शुभकामना प्रदान की गई।

2). दिनांक 01/09/2025 को भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, पश्चिम केंद्र, पुणे में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्या.-2), पुणे के तत्वावधान में नराकास, पुणे (कार्या.-2) के सदस्य कार्यालयों हेतु एक दिवसीय राजभाषा वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस आयोजन हेतु सदस्य सचिव द्वारा आयोजक कार्यालय को धन्यवाद ज्ञापित किया गया ।

3. सभी सदस्य कार्यालयों हेतु गृह पत्रिका तथा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार योजना का आरंभ किया गया है, जिसके पुरस्कार प्रोफार्मा आमंत्रित किए गए है ।

(5). **आगामी कार्यक्रमों के संबंध में चर्चा -**

(क) पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन:- सचिव, न.रा.का.स. ने प्रस्ताव दिया कि नगर राज. कार्या. समिति के तत्वावधान में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा, इसी कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा सदस्य कार्यालयों के पत्रिका / राजभाषा कार्या. संबंधी पुरस्कार भी प्रदान किए जाएंगे। यह आयोजन आगामी जनवरी/फरवरी, 2026 में किया जाएगा ।

इस प्रस्ताव पर अध्यक्ष महोदय ने स्वीकृति प्रदान की।

(ख) नराकास पत्रिका का प्रकाशन :- सचिव, न.रा.का.स. ने सूचित किया कि नराकास पत्रिका हेतु संपादक मंडल का गठन हो चुका है तथा इसकी 1 बैठक भी आयोजित की जा चुकी है, लेकिन सभी सदस्य कार्यालयों से रचनाएं प्राप्त नहीं हुई है। उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों से शीघ्र ही न्यूनतम 2-2 रचनाएं भेजने का निवेदन किया, जिससे कि शीघ्र ही नराकास पत्रिका का प्रकाशन हो सकें ।

(ग) अंशदान देने वाले सदस्य कार्यालयों को धन्यवाद ज्ञापन एवं सूचना :-

1. सदस्य सचिव, नराकास (का.-2), पुणे) द्वारा अंशदान देने वाले सदस्य कार्यालयों का धन्यवाद किया गया तथा जिन सदस्यों ने अंशदान नहीं दिया है, उनसे भी इस संबंध में शीघ्र कार्रवाई का निवेदन किया गया । यह भी सूचित किया गया कि चूंकि नराकास एक सामूहिक मंच है और सभी प्रकार की गतिविधियों को आयोजित करने के लिए पर्याप्त निधि की आवश्कयता होती है, इसलिए सभी सदस्य कार्यालयों को अंशदान देना अनिवार्य है । इसके साथ ही उन्होंने सभी कार्यालयों से अंशदान देने के पश्चात अंशदान संबंधी सूचना प्रदान करने का निवेदन किया ताकि आगे की कार्रवाई की जा सकें।

2. इस संबंध में यह भी सूचित किया गया कि बहुत से कार्यालय अंशदान नहीं दे रहे हैं। इस संबंध में ऐसे कार्यालयों को चिह्नित किया गया है और उनसे अलग से पत्र व्यवहार किया गया है, लेकिन 2-3 बार पत्र भेजने के बाद भी उनका कोई प्रत्युत्तर नहीं है। इस संबंध में विचार विमर्श किया गया और यह निर्णय लिया गया कि ऐसे कार्यालयों को एक आखिरी पत्र अध्यक्ष महोदय के हस्ताक्षर से भेजा जाए, जिसमें यह स्पष्ट लिखा हो कि पत्र प्राप्ति के २ सप्ताह के भीतर अंशदान प्राप्त होने पर ही सदस्यता जारी रहेगी, अन्यथा ऐसे कार्यालयों की सदस्यता रद्द कर दी जाएगी, तथा आगामी भविष्य में उनकी सदस्यता लेने पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। अध्यक्ष महोदय ने यह सुझाव भी दिया कि ऐसे कार्यालयों को नराकास की सदस्यता रद्द होने के परिणामों से भी अवगत कराया जाए।

3. सदस्य सचिव ने अंशदान राशि बढ़ाने के बारे में प्रस्ताव रखा, जिस पर अध्यक्ष महोदय का यह निर्णय हुआ कि इस वर्ष राशि को पिछले वर्ष के जैसे ही (छोटे कार्यालयों के लिए 5,000/- रू. प्रतिवर्ष तथा बड़े कार्यालयों के लिए 10,000/- रू. प्रतिवर्ष) यथावत रखा जाए, लेकिन कोई सदस्य चाहे तो इससे अधिक राशि भी अंशदान के तौर पर दे सकता है।

(घ) सदस्य कार्यालयों के राजभाषा कर्मियों का सेवानिवृत्ति पर सत्कार - सचिव सदस्य ने जानकारी दी कि बहुत से सदस्यों का निवेदन है कि नराकास की ओर से सामूहिक मंच पर सदस्य कार्यालयों के राजभाषा कर्मियों का सेवानिवृत्ति पर सत्कार होना चाहिए । इस संबंध में सर्वसम्मति से यह तय किया गया कि नराकास की छ:माही बैठक में उन राजभाषा कर्मियों का सेवानिवृत्ति सत्कार किया जाएगा, जो आगामी 6 महीने की अवधि में सेवानिवृत्त हो रहे हैं। इसके लिए जब बैठक की सूचना प्रदान की जाएगी, तभी सदस्य कार्यालयों को अपने राजभाषा कर्मियों की सेवानिवृत्ति की जानकारी देनी होगी। यह सत्कार योजना केवल मूल पद वाले कार्मिकों के लिए होगी, प्रभारी कार्मिकों के लिए नहीं। इस निर्णय पर सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने हर्ष व्यक्त किया तथा सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव रखा गया कि इस बैठक में जो राजभाषा कर्मी आगामी अवधि में सेवानिवृत्त होने वाले हैं, उनका सत्कार अभी कर दिया जाए। अध्यक्ष महोदय से अनुमति लेकर इस बैठक में 2 राजभाषा कर्मियों का सत्कार तुरंत किया गया, जिसकी सभी उपस्थित सदस्यों ने बहुत सराहना की।

(6). **विशिष्ट अतिथियों का संबोधन :-** इसके पश्चात् **श्री अरूण रा. ठाकुर** (मुख्य महाप्रबंधक, गोला बारूद निर्माणी, खड़की, पुणे) एवं डॉ. के. वी. प्रसाद (निदेशक, भा. कृ. अनु. प.- पुष्प विज्ञान अनुसंधान निदेशालय, पुणे) ने अपने - अपने संस्थानों में किए जा रहे राजभाषा संबंधी कार्यों की जानकारी प्रदान की ।

(7). **अध्यक्ष का संबोधन:- डॉ. आशीष लेले** (निदेशक, एनसीएल एवं अध्यक्ष, नराकास) ने बैठक में उपस्थित सभी संस्थानों के प्रमुख तथा अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत करते हुए कहा कि मैं आप सबसे निवेदन करना चाहता हूं कि इस समिति के माध्यम से हम सभी आपस में मिल कर राजभाषा का विकास तो करें ही, साथ ही अपने राष्ट्र के विकास और प्रगति में भी अपना योगदान दें।

इसके उपरांत डॉ. आशीष लेले (निदेशक, एनसीएल एवं अध्यक्ष, न.रा.का.स. (का.-2), पुणे) द्वारा **श्री अरूण रा. ठाकुर** एवं **डॉ. के. वी. प्रसाद** को स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

(8). **धन्यवाद ज्ञापन :-** कार्यक्रम के अंत में **डॉ. स्वाति चड्ढा** द्वारा सभी सदस्य-कार्यालयों से जुड़े कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों को धन्यवाद देते हुए बैठक समाप्त हुई।

सीएसआईआर - राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे

वर्ष 1950 में स्थापित सीएसआईआर-एनसीएल ने भारत में रायासनिक उद्योग के वृद्धि एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने विश्व की कुछ सबसे बड़ी कंपनियों के साथ अनुसंधान में भागीदारी की है। सीएसआईआर-एनसीएल से विकसित अनेक प्रक्रियाओं एवं उत्पादों का घरेलू खपत और निर्यात के लिए उद्योग द्वारा सफलतापूर्वक व्यावसायीकरण किया गया है।

सीएसआईआर-एनसीएल सेवा क्षेत्र जैसे

- उन्नत सामग्री
- स्वच्छ ऊर्जा एवं पर्यावरण
- स्थायी रासायनिक उद्योग
- औषधियां और फार्मास्यूटिकल्स रासायनिक
- रासायनिक एवं बहुलक इंजीनियरिंग

विषयगत अनुसंधान रोडमैप

इस रोडमैप का उद्देश्य सार्वजनिक, निजी, सामाजिक और रणनीतिक वस्तुओं के लिए प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए प्रमुख हितधारकों के साथ प्रयोगशाला की वैज्ञानिक उत्कृष्टता और रूपांतरण के जुनून का लाभ उठाना है।

विश्लेषणात्मक सुविधा

एक अत्याधुनिक विश्लेषणात्मक सुविधा जो अत्याधुनिक विश्लेषणात्मक उपकरणों की एक श्रृंखला का आयोजन करती है।
यह अपने उपयोगकर्ताओं को विशेषज्ञता एवं मार्गदर्शन के साथ-साथ उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान एवं तकनीकी सेवाएं प्रदान करने के लिए समर्पित है।

राष्ट्रीय औद्योगिक सूक्ष्म जीव केंद्र (एनसीआईएम)

एक राष्ट्रीय सुविधा और सूक्ष्मजीव संवर्धन संग्रह जो प्रामाणिक और औद्योगिक रूप से महत्वपूर्ण सूक्ष्मजीव उपभेदों के अलगाव, संरक्षण और वितरण के लिए समर्पित है। बैक्टीरिया, कवक, यीस्ट और शैवाल की 5000 से अधिक सूक्ष्मजीवी संवर्धन व्यावसायिक उपयोग के लिए उपलब्ध है।

कौशल विकास कार्यक्रम (एसडीपी)

स्नातकों, स्नातकोत्तरों, उद्योग श्रमिकों, कर्मचारियों और बेरोजगार युवाओं, जिनके पास उपयुक्त शैक्षिक योग्यता है लेकिन फिर भी रोजगार खोजने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, के लिए औद्योगिक रूप से महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों, उपकरण तकनीकों तथा अनुसंधान उपकरणों में लघु मॉड्यूल-आधारित, व्यावहारिक प्रमाणन पाठ्यक्रम।

संपर्क करें

डॉ. होमी भाभा रोड, पुणे (भारत)-411 008

www.ncl.res.in
director.ncl@csir.res.in
@csir.ncl @csir_ncl @nclpune
@csir-national-chemical-laboratory

म्यूनिशंस इंडिया लिमिटेड
Munitions India Limited

Accurate. Lethal. Reliable.

भारत सरकार का उद्यम
रक्षा मंत्रालय, पुणे

Large Calibre Ammunition

Mortar Bombs

Medium Calibre Ammunition

Tank Ammunition

Grenade
40 MIL VOG - 25 HE

Grenade
30 MM MIL- 17 HE

Small Calibre Ammunition

Rocket Pinaka

- Quantum leap in Exports
- Over 95% Indigenisation
- Strong technological base

पंजीकृत पता : गोला बारुद निर्माणी, खड़की, पुणे, महाराष्ट्र 411003.
निगमित कार्यालय पताः दूसरी मंजिल, न्याति यूनिट्री, नगर रोड, येरवडा, पुणे - 411 006
Regd. Address: Ammunition Factory, Khadki, Pune, Maharashtra - 411 003.
Corporate Office Address: 2nd Floor, Nyati Unitree, Nagar Road, Yerwada, Pune - 411 006

@indiamunitions
https://munitionsindia.co.in
munitions india limited

+91-20-67080400 / 414 / 440
mil@munitionsindia.co.in
exports@munitionsindia.co.in

विभिन्न गतिविधियों की झलकियां

सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India

सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे

राजभाषा विभाग

Website: www.rajbhasha.gov.in

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-2), पुणे

Website: https://www.ncl-india.org/Tolic/Index

Facebook

मोबाइल: 9890611094 (केवल राजभाषा कार्य हेतु)

संयोजक कार्यालय

Website: https://www.ncl-india.org

निदेशक ईमेल: director.ncl@csir.res.in

सदस्य सचिव ईमेल: s.chadha@csir.res.in

सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला

डॉ. होमी भाभा मार्ग, पाषाण, पुणे – 411008.